CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. विषमता शोषण की जननी है । समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतया शोषण उतना ही अधिक होगा । चूँकि हमारे देश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक असमानताएँ अधिक हैं जिसकी वज़ह से एक व्यक्ति एक स्थान पर शोषक तथा वही दूसरे स्थान पर शोषित होता है । चूँकि जब बात उपभोक्ता संरक्षण की हो तब पहला प्रश्न यह उठता है कि उपभोक्ता किसे कहते हैं ? या उपभोक्ता की परिभाषा क्या है ? सामान्यतः उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह को उपभोक्ता कहा जाता है जो सीधे तौर पर किन्हीं भी वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं । इस प्रकार सभी व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में शोषण का शिकार अवश्य होते हैं ।

हमारे देश में ऐसे अशिक्षित, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से दुर्बल अशक्त लोगों की भीड़ है जो शहर की मलिन बस्तियों में, फुटपाथ पर, सड़क तथा रेलवे लाइन के किनारे, गंदे नालों के किनारे झोपड़ी डालकर अथवा किसी भी अन्य तरह से अपना जीवन-यापन कर रहे हैं । वे दुनिया के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश की समाजोपयोगी ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित हैं, जिन्हें आधुनिक सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों एवं तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने मिलकर बाँट लिया है । सही मायने में शोषण इन्हीं की देन है ।

उपभोक्ता शोषण का तात्पर्य केवल उत्पादकता व व्यापारियों द्वारा किए गए शोषण से ही लिया जाता है जबकि इसके क्षेत्र में वस्तुएँ एवं सेवाएँ दोनों ही सम्मिलित हैं, जिनके अन्तर्गत डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, वकील सभी आते हैं । इन सबने शोषण के क्षेत्र में जो कीर्तिमान बनाए हैं वे वास्तव में गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज़ कराने लायक हैं ।

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [15 अंक]

1(क). गद्यांश का समुचित शीर्षक लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पूरे गद्यांश का केंद्रीय विचार पहचानकर संक्षिप्त और व्यापक शीर्षक चुनना चाहिए।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: मुख्य विषय पहचानें गद्यांश सामाजिक विषमता से उत्पन्न शोषण की चर्चा करता है। आगे उपभोक्ता की परिभाषा देते हुए वस्तुओं और सेवाओं के उपयोगकर्ताओं के शोषण का क्षेत्र समझाया गया है।

चरण 2: शीर्षक का औचित्य देखें केवल गरीबी या व्यापारियों को शीर्षक बनाने से सेवाओं और व्यापक सामाजिक असमानता का प्रसंग छूट जाएगा। उपभोक्ता शोषण को केंद्र में रखने से गद्यांश के तीनों अनुच्छेद समाहित हो जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समुचित शीर्षक है : उपभोक्ता शोषण : कारण और व्यापकता।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

1(ख). 'विषमता' शब्द से मूल शब्द तथा प्रत्यय छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यय मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाता है; शब्द का अर्थ और उसकी रचना दोनों देखे जाते हैं।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: मूल शब्द अलग करें विषमता का अर्थ असमानता है। इसमें विषम मूल शब्द है, जिसका अर्थ असमान अथवा एकसमान न होना है। मूल शब्द को अलग करने पर उसका स्वतंत्र अर्थ बना रहता है।

चरण 2: प्रत्यय पहचानें विषम के अंत में ता जुड़ने से विषमता बनता है। ता प्रत्यय विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाता है। यहाँ वि को अलग करना प्रश्न के अनुसार मूल शब्द और प्रत्यय का उचित विभाजन नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष मूल शब्द : विषम; प्रत्यय : ता। शब्द-रचना : विषम + ता = विषमता।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

1(ग). 'ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित है' – वाक्य का आशय समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी अभिव्यक्ति का आशय उसके पहले और बाद के कथन से स्पष्ट किया जाता है। ऊर्ध्वमुखी का अर्थ उन्नति की ओर ले जाने वाला है।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: योजनाओं का उद्देश्य समझें ऊर्ध्वमुखी योजनाएँ वे समाजोपयोगी योजनाएँ हैं जो जनता की दशा सुधारकर उसे विकास और उन्नति की ओर ले जाने के लिए बनाई जाती हैं। गद्यांश का संकेत विशेष रूप से उन गरीब और असहाय लोगों की ओर है जिन्हें इन योजनाओं का लाभ मिलना चाहिए।

चरण 2: वंचित होने का संदर्भ बताएँ गद्यांश में अशिक्षित और सामाजिक तथा आर्थिक रूप से दुर्बल लोगों के झोपड़ियों तथा फुटपाथों पर जीवन बिताने का उल्लेख है। उनके लिए बनी योजनाओं के लाभ प्रभावशाली सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों और तथाकथित बुद्धिजीवियों ने आपस में बाँट लिए हैं। इसलिए जरूरतमंदों की स्थिति नहीं सुधरती और वे विकास के लाभों से दूर रह जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि गरीब, अशिक्षित और दुर्बल जनता अपने उत्थान के लिए बनी विकास योजनाओं के लाभों से वंचित है, क्योंकि प्रभावशाली वर्ग ने वे लाभ अपने हाथों में समेट लिए हैं।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

1(घ). 'विषमता शोषण की जननी है' – कैसे ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जननी का प्रयोग यहाँ जन्म देने वाले कारण के अर्थ में हुआ है। उत्तर में विषमता और शोषण का संबंध स्पष्ट करना है।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: विषमता का स्वरूप बताएँ गद्यांश सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक असमानताओं का उल्लेख करता है। इन असमानताओं के कारण समाज के सभी लोगों के पास समान शक्ति और अवसर नहीं होते। कोई वर्ग अधिक समर्थ हो जाता है और कोई वर्ग निर्बल तथा असहाय बना रहता है।

चरण 2: शोषण से संबंध स्थापित करें समर्थ वर्ग अपनी बेहतर स्थिति का लाभ उठाकर निर्बल लोगों के अधिकार और सुविधाएँ हड़प लेता है। गद्यांश में समाजोपयोगी योजनाओं को प्रभावशाली वर्ग द्वारा बाँट लेने का उदाहरण इसी संबंध को स्पष्ट करता है। इसलिए जहाँ असमानता अधिक होती है, वहाँ शोषण की संभावना भी बढ़ती है। एक व्यक्ति एक स्थान पर शोषक होते हुए दूसरे स्थान पर शोषित भी हो सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष विषमता शक्तिशाली और निर्बल वर्गों का अंतर बढ़ाती है। शक्तिशाली लोग इस अंतर का लाभ उठाकर दुर्बलों के अधिकार तथा सुविधाएँ हड़पते हैं; इसी कारण विषमता को शोषण की जननी कहा गया है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

1(ङ). समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतः शोषण उतना ही अधिक होगा । वाक्य-भेद लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचना के आधार पर वाक्य-भेद पहचानने के लिए प्रधान और आश्रित उपवाक्यों का संबंध देखा जाता है।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: उपवाक्य अलग करें वाक्य के दो भाग हैं : समाज में जितनी विषमता होगी और सामान्यतः शोषण उतना ही अधिक होगा। दूसरे भाग में शोषण की अधिकता की मुख्य बात कही गई है।

चरण 2: संबंध की जाँच करें जितनी और उतना सहसंबंधी शब्द हैं। जितनी विषमता होगी वाला अंश मुख्य कथन पर निर्भर है। इसमें एक प्रधान तथा एक आश्रित उपवाक्य है; दोनों स्वतंत्र समान स्तर के कथन नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रचना के आधार पर यह मिश्र वाक्य है। इसमें जितनी विषमता होगी आश्रित उपवाक्य और शोषण उतना ही अधिक होगा प्रधान उपवाक्य है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

1(च). उपभोक्ता शोषण से क्या आशय है ? इसकी सीमाएँ कहाँ तक हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में आशय और सीमा दोनों पूछे गए हैं, इसलिए परिभाषा के साथ वस्तुओं तथा सेवाओं का विस्तार बताना आवश्यक है।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: शोषण का अर्थ स्पष्ट करें उपभोक्ता वह है जो वस्तुओं या सेवाओं का प्रत्यक्ष उपयोग करता है। उपयोगकर्ता की दुर्बलता का अनुचित लाभ उठाकर उसका शोषण करना उपभोक्ता शोषण है। गद्यांश इसे केवल वस्तुएँ खरीदने वाले लोगों तक सीमित नहीं मानता, क्योंकि व्यक्ति सेवा ग्रहण करते समय भी उपभोक्ता होता है।

चरण 2: उसकी व्यापक सीमा बताएँ सामान्यतः इस शोषण के लिए उत्पादकों और व्यापारियों को जिम्मेदार समझा जाता है। किंतु गद्यांश स्पष्ट करता है कि वस्तुओं के साथ सेवाएँ भी इसके क्षेत्र में आती हैं। इसलिए डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी और वकील जैसे सेवा प्रदाता भी इस दायरे में आते हैं। इस प्रकार उपभोक्ता शोषण का क्षेत्र उत्पादन और व्यापार से कहीं अधिक व्यापक है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तुओं या सेवाओं का उपयोग करने वालों का अनुचित लाभ उठाना उपभोक्ता शोषण है। इसका क्षेत्र उत्पादकों और व्यापारियों से आगे चिकित्सा, शिक्षा, प्रशासन और वकालत जैसी सेवाओं तक फैला हुआ है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

1(छ). देश की समाजोपयोगी योजनाओं से कौन-सा वर्ग वंचित रह जाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कौन और क्यों के उत्तर अलग पहचानकर गद्यांश में वर्णित वर्ग तथा लाभों के बँटवारे का संबंध बताना चाहिए।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: वंचित वर्ग पहचानें देश की समाजोपयोगी योजनाओं से अशिक्षित, सामाजिक और आर्थिक रूप से दुर्बल तथा अशक्त लोग वंचित रह जाते हैं। गद्यांश में उनकी पहचान मलिन बस्तियों, फुटपाथों, सड़कों, रेलवे लाइनों और गंदे नालों के किनारे झोपड़ियाँ डालकर

जीवन बिताने वाले लोगों के रूप में की गई है।

चरण 2: वंचना का कारण बताएँ गद्यांश के अनुसार आधुनिक सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों और तथाकथित बुद्धिजीवियों ने इन योजनाओं के लाभ आपस में बाँट लिए हैं। फलतः जिन लोगों को वास्तव में सहायता और उन्नति के अवसर मिलने चाहिए, वे उनसे दूर रह जाते हैं। उत्तर में केवल गरीबी लिखना पर्याप्त नहीं है; लाभों पर प्रभावशाली वर्ग के कब्जे का उल्लेख भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष अशिक्षित, गरीब, सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर तथा अशक्त वर्ग योजनाओं से वंचित रह जाता है, क्योंकि प्रभावशाली सफ़ेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों और तथाकथित बुद्धिजीवियों ने योजनाओं के लाभ आपस में बाँट लिए हैं।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

1(ज). उपभोक्ता किसे कहते हैं ? उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण क्या है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का पहला भाग उपभोक्ता की पहचान और दूसरा भाग गद्यांश में बताए गए शोषण के मूल कारण को व्यक्त करता है।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: उपभोक्ता की परिभाषा दें गद्यांश के अनुसार जो व्यक्ति या व्यक्ति-समूह प्रत्यक्ष रूप से किन्हीं वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करता है, वह उपभोक्ता कहलाता है। इसलिए यह शब्द केवल वस्तुएँ खरीदने वाले व्यक्ति के लिए नहीं है। सेवाओं का उपयोग करने वाला व्यक्ति भी इसके अंतर्गत आता है और प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में उपभोक्ता होता है।

चरण 2: मुख्य कारण बताएँ उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण समाज में व्याप्त विषमता है। गद्यांश विशेष रूप से सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक असमानताओं को रेखांकित करता है। इन्हीं के कारण समर्थ व्यक्ति कमजोर व्यक्ति का लाभ उठाता है। शोषण का कारण केवल व्यापार नहीं है; समाज में शक्ति और अवसरों का असमान वितरण इसे बढ़ावा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तुओं अथवा सेवाओं का सीधे उपयोग करने वाला व्यक्ति या व्यक्ति-समूह उपभोक्ता कहलाता है। उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विषमता है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

1(झ). सामान्यतः शोषण का दोषी किसे कहा जाता है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामान्यतः शब्द के कारण पहले प्रचलित धारणा बतानी है; फिर गद्यांश के अनुसार उसकी सीमा समझनी है।
- उत्तर में पूछे गए बिंदुओं को स्पष्ट रखते हुए गद्यांश के प्रसंग और भाषा के अनुसार निष्कर्ष दिया जाता है।

चरण 1: सामान्य धारणा बताएँ सामान्यतः उत्पादकों और व्यापारियों को उपभोक्ता शोषण का दोषी कहा जाता है। लोग उपभोक्ता शोषण को प्रायः वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार के क्षेत्र में होने वाले शोषण से जोड़कर देखते हैं। इसी सीमित दृष्टि के कारण इन दो वर्गों को मुख्य रूप से दोष दिया जाता है।

चरण 2: गद्यांश का स्पष्टीकरण दें उत्पादक और व्यापारी उपभोक्ता को वस्तुएँ उपलब्ध कराने वाले वर्ग हैं; वस्तुओं के उपयोग में होने वाला शोषण उन्हीं से संबंधित मान लिया जाता है। किंतु लेखक इस धारणा को अधूरा बताता है। उसके अनुसार सेवाओं का क्षेत्र भी इसमें आता है, इसलिए डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी और वकील भी शोषण के दायरे से बाहर नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सामान्यतः उत्पादकों और व्यापारियों को दोषी कहा जाता है, क्योंकि उपभोक्ता शोषण को केवल वस्तुओं के उत्पादन

और व्यापार से संबंधित शोषण समझ लिया जाता है। गद्यांश के अनुसार सेवाओं में होने वाला शोषण भी इसी में शामिल है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की संबंधित पंक्ति से उत्तर का आधार चुनें।

2. आँसू से भाग्य पसीजा है, हे मित्र, कहाँ इस जग में ?
नित यहाँ शक्ति के आगे, दीपक जलते मग-मग में ।
कुछ तनिक ध्यान से सोचो, धरती किसकी हो पाई ?
बोलो युग-युग तक किसने, किसकी विरुदावलि गाई ?
मधुमास मधुर रुचिकर है, पर पतझर भी आता है ।
जग रंगमंच का अभिनय, जो आता सो जाता है ।
सचमुच वह ही जीवित है, जिसमें कुछ बल-विक्रम है ।
पल-पल घुड़दौड़ यहाँ है, बल-पौरुष का संगम है
दुर्बल को सहज मिटाकर, चुपचाप समय खा जाता,
वीरों के ही गीतों को, इतिहास सदा दोहराता ।
फिर क्या विषाद, भय चिंता जो होगा सब सह लेंगे,
परिवर्तन की लहरों में जैसे होगा बह लेंगे ।
नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [5 अंक]

2(क). कविता का मूल सन्देश क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता का केंद्रीय भाव पहचानने के लिए उसके आरंभ, मध्य और अंतिम आह्वान को जोड़ना चाहिए।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों, भावों और उनके पारस्परिक संबंध पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश के संकेत पहचानें कवि आरंभ में बताता है कि आँसू बहाने से भाग्य नहीं बदलता। आगे वह बल, पराक्रम और साहस का महत्त्व बताता है तथा अंत में परिवर्तन और कठिनाइयों को सहने की प्रेरणा देता है।

चरण 2: संदेश को एक सूत्र में बाँधें इन सभी विचारों का संबंध जीवन के संघर्ष से है। मनुष्य को भय, चिंता और निराशा में डूबने के स्थान पर आत्मबल और पुरुषार्थ से परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। केवल दुख व्यक्त करने से सफलता नहीं मिलती।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का मूल संदेश है कि मनुष्य साहस, आत्मबल और पुरुषार्थ से कठिनाइयों तथा परिवर्तनों का सामना करे; रोने या भयभीत होने से भाग्य नहीं बदलता।

त्वरित सुझाव: मूल संदेश लिखते समय कविता की अंतिम प्रेरणा को आरंभ के विचार से जोड़िए।

2(ख). 'रोने से दुर्भाग्य सौभाग्य में नहीं बदल जाता' के भाव की पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में दिए भाव को कविता के शब्दों से मिलाकर उसकी अभिव्यक्ति करने वाली मूल पंक्ति चुननी है।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों, भावों और उनके पारस्परिक संबंध पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश के संकेत पहचानें प्रश्न का आशय है कि आँसू बहाने से दुर्भाग्य दूर नहीं होता। काव्यांश की पहली पंक्ति में कवि मित्र से पूछता है कि इस संसार में कब किसी का भाग्य आँसुओं से पिघला है। इस प्रश्न में ही रोने की निष्फलता का भाव निहित है।

चरण 2: मूल पंक्ति यथावत लिखें यहाँ अपनी व्याख्या के बदले कविता के शब्द लिखना आवश्यक है। पहली पंक्ति का प्रश्नवाचक रूप यह स्पष्ट करता है कि केवल दुख प्रकट करने से परिस्थितियाँ नहीं बदलतीं।

चरण 3: निष्कर्ष 'आँसू से भाग्य पसीजा है, हे मित्र, कहाँ इस जग में ?'

त्वरित सुझाव: भाव की पंक्ति छाँटने वाले प्रश्न में उत्तर के रूप में कविता के मूल शब्द ही लिखिए।

2(ग). समय किसे नष्ट कर देता है और कैसे ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दोनों पक्षों का उत्तर देना है: समय किसे नष्ट करता है और किस प्रकार करता है।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों, भावों और उनके पारस्परिक संबंध पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश के संकेत पहचानें कवि कहता है, 'दुर्बल को सहज मिटाकर, चुपचाप समय खा जाता'। यहाँ दुर्बल से आशय उस मनुष्य से है जिसमें संघर्ष का सामना करने का साहस और आत्मबल नहीं है। उत्तर का आधार यही पंक्ति है।

चरण 2: नष्ट होने की प्रक्रिया स्पष्ट करें समय दुर्बल को सहज ही और चुपचाप नष्ट कर देता है। कविता में समय को खा जाने वाला बताकर उसकी निरंतर गति और दुर्बल व्यक्ति के मिट जाने की स्थिति व्यक्त की गई है।

चरण 3: निष्कर्ष समय दुर्बल मनुष्य को सहज ही मिटाकर चुपचाप नष्ट कर देता है।

त्वरित सुझाव: किसे और कैसे जैसे दो प्रश्नवाचक शब्द हों तो उत्तर में व्यक्ति और प्रक्रिया दोनों लिखिए।

2(घ). इतिहास किसे याद रखता है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में इतिहास के संदर्भ को उससे पहले आए बल और पराक्रम के विचार से जोड़ना है।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों, भावों और उनके पारस्परिक संबंध पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश के संकेत पहचानें 'वीरों के ही गीतों को, इतिहास सदा दोहराता' पंक्ति बताती है कि इतिहास वीरों को याद रखता है। कवि ने इससे पहले सच्चे जीवन की पहचान बल और विक्रम को बताया है। इस प्रकार वीरता स्मरण का आधार बनती है।

चरण 2: स्मरण का कारण बताएँ वीर व्यक्ति साहस और पराक्रम से जीवन के संघर्षों का सामना करते हैं। उनके कर्म उनकी पहचान बनते हैं और दूसरों के लिए प्रेरक होते हैं। इसलिए इतिहास बार-बार उनकी वीरता का गुणगान करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इतिहास वीरों को याद रखता है, क्योंकि वे साहस, बल और पराक्रम से संघर्षों का सामना करते हैं; उनके वीरतापूर्ण कर्म स्मरणीय होते हैं।

त्वरित सुझाव: इतिहास संबंधी उत्तर में कविता की वीरों वाली पंक्ति और बल-विक्रम के संदर्भ को साथ रखिए।

2(ङ). 'मधुमास मधुर रुचिकर है, पर पतझर भी आता है' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मधुमास और पतझर के प्रतीकात्मक अर्थ पहचानकर पंक्ति का जीवन से संबंध स्पष्ट करना है।
- उत्तर केवल दिए गए काव्यांश के शब्दों, भावों और उनके पारस्परिक संबंध पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश के संकेत पहचानें मधुमास अर्थात वसंत मधुर और रुचिकर होता है; यह सुख, आनंद और अनुकूल परिस्थितियों का प्रतीक है। पतझर में पेड़ों के पत्ते झड़ते हैं; वह दुख और प्रतिकूल परिस्थितियों का संकेत है। दोनों ऋतुओं का आना परिवर्तन दिखाता है।

चरण 2: जीवन का आशय स्पष्ट करें जैसे प्रकृति में केवल वसंत नहीं रहता, वैसे ही जीवन में सुख सदा स्थायी नहीं होता। दुख भी आता है। मनुष्य को इस परिवर्तन को स्वीकार करके धैर्य और साहस बनाए रखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का भाव है कि जीवन में सुख के साथ दुख भी आते हैं। सुख स्थायी नहीं है; इसलिए प्रतिकूल समय आने पर धैर्य रखकर उसका सामना करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: प्रकृति के बिंब का भावार्थ लिखते समय उसके प्रतीक और जीवन-संदेश दोनों स्पष्ट कीजिए।

नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

3(क). विद्या धन सब धनन में सदा रह्यो सिरमौर [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषय के केंद्रीय विचार को प्रस्तावना, विवेचन और उपसंहार में क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना निबंध का आधार है।
- विद्या की श्रेष्ठता बताते समय उसके स्थायी स्वरूप, उपयोग, नैतिक दिशा और समाज के कल्याण से संबंध को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: विषय और रूपरेखा तय करें शीर्षक विषयानुकूल रखें। प्रस्तावना में विद्या और धन का संबंध स्पष्ट करें। मुख्य भाग में विद्या की स्थायित्व, स्वावलंबन, विवेक और समाजोपयोगिता पर चर्चा करें। अंत में ज्ञान के सदुपयोग का संदेश दें। भाषा सरल हो और हर अनुच्छेद पिछले विचार को आगे बढ़ाए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध विद्या धन सब धनन में सदा रह्यो सिरमौर

मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार का धन अर्जित करता है। कोई भूमि और भवन को संपत्ति मानता है, तो कोई सोने और धनराशि को। किंतु इन सबसे श्रेष्ठ धन विद्या है। भौतिक धन सुख के साधन जुटाता है, जबकि विद्या मनुष्य को उन साधनों का उचित उपयोग करना सिखाती है। इसीलिए विद्या को सभी धनों का सिरमौर कहा गया है।

विद्या का अर्थ केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं है। यह ज्ञान, विवेक, कौशल और अच्छे संस्कारों का विकास है। पढ़ा-लिखा व्यक्ति तर्क करना, सही निर्णय लेना और नई परिस्थितियों में समाधान खोजना सीखता है। विद्या उसे अपनी क्षमता पहचानने तथा श्रम के बल पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

भौतिक धन चोरी हो सकता है, नष्ट हो सकता है या खर्च करने पर घट सकता है। इसके विपरीत अर्जित ज्ञान व्यक्ति के साथ रहता है। विपत्ति में धन छिन जाने पर भी कुशल और शिक्षित व्यक्ति फिर से अपने जीवन को सँवार सकता है। ज्ञान की एक विशेषता यह भी है कि बाँटने से उसका विस्तार होता है। दूसरों को पढ़ाते समय अपना ज्ञान भी अधिक स्पष्ट और समृद्ध होता है।

विद्या व्यक्ति को स्वावलंबी बनाती है। किसान नई विधियाँ सीखकर उपज बढ़ाता है, चिकित्सक ज्ञान से रोगियों का उपचार करता है और वैज्ञानिक अनुसंधान से मानव जीवन को सुगम बनाता है। इस प्रकार ज्ञान केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, समाज की प्रगति का भी आधार है। शिक्षा अज्ञान, अंधविश्वास और भेदभाव को दूर करने में सहायता करती है। वह व्यक्ति को अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक बनाती है।

फिर भी ज्ञान का मूल्य उसके सदुपयोग में है। यदि शिक्षित व्यक्ति अपने कौशल का प्रयोग छल और शोषण के लिए करे, तो उसकी शिक्षा

समाज के लिए उपयोगी नहीं होगी। सच्ची विद्या विनम्रता, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी सिखाती है। इसलिए शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश भी आवश्यक है।

विद्या ऐसा धन है जो व्यक्ति को आत्मविश्वास देता है और समाज को दिशा दिखाता है। हमें केवल धन कमाने के लिए नहीं, बेहतर मनुष्य बनने के लिए भी सीखना चाहिए। निरंतर अध्ययन, जिज्ञासा और ज्ञान का लोकहित में उपयोग ही विद्या की श्रेष्ठता को सार्थक बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विद्या सभी धनों में श्रेष्ठ है, क्योंकि वह स्थायी सामर्थ्य, विवेक और स्वावलंबन देती है। उसका सच्चा मूल्य मानवीय मूल्यों तथा समाजहित में किए गए उपयोग से प्रकट होता है।

त्वरित सुझाव: निबंध में हर अनुच्छेद को अलग तर्क दीजिए और अंतिम अनुच्छेद में शीर्षक के विचार को सार्थक कीजिए।

3(ख). नारी की बदलती भूमिकाएँ

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाज में स्त्री की बदलती स्थिति, उसकी उपलब्धियों और शेष चुनौतियों पर संतुलित विचार प्रस्तुत करना निबंध का उद्देश्य है।
- निबंध की संगति के लिए भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार को एक केंद्रीय विचार से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना भूमिका में नारी के महत्त्व का उल्लेख करें। विस्तार में शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, सार्वजनिक जीवन और पारिवारिक जिम्मेदारियों को जोड़ें। निष्कर्ष में समान अवसर और सम्मान की आवश्यकता रखें। शीर्षक स्पष्ट रखें और प्रत्येक अनुच्छेद में एक मुख्य विचार विकसित करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध नारी की बदलती भूमिकाएँ

नारी समाज की सहनिर्माता है। परिवार में उसका स्नेह और श्रम जितना महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही महत्त्वपूर्ण उसकी स्वतंत्र पहचान भी है। समय के साथ उसकी भूमिका का विस्तार हुआ है। आज वह केवल घर की व्यवस्था सँभालने तक सीमित नहीं है; वह शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, व्यापार और कला में भी अपनी प्रतिभा सिद्ध कर रही है।

शिक्षा ने इस परिवर्तन की मजबूत नींव रखी है। शिक्षित स्त्री अपने अधिकारों को पहचानती है, निर्णयों में भाग लेती है और अगली पीढ़ी को जागरूक बनाती है। आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उसे जीवन के विकल्प चुनने का साहस दिया है। अध्यापिका, चिकित्सक, वैज्ञानिक, खिलाड़ी और उद्यमी के रूप में वह समाज के विकास में योगदान दे रही है। पंचायतों और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं में उसकी भागीदारी से सामाजिक प्रश्नों को नए दृष्टिकोण मिलते हैं।

फिर भी उपलब्धियों की यह तस्वीर अधूरी है। अनेक स्त्रियाँ भेदभाव, असुरक्षा, बाल विवाह और अवसरों की कमी से जूझ रही हैं। नौकरी करने वाली स्त्री से प्रायः घर का पूरा काम भी अकेले करने की अपेक्षा की जाती है। इस दोहरे बोझ को कम करने के लिए परिवार के सभी सदस्यों को जिम्मेदारी बाँटनी चाहिए। घरेलू श्रम का सम्मान भी आवश्यक है।

नारी की बदलती भूमिका पुरुष की भूमिका को समाप्त नहीं करती, बल्कि साझेदारी का नया आधार बनाती है। बेटियों को शिक्षा, सुरक्षा और निर्णय की स्वतंत्रता देकर ही वास्तविक प्रगति संभव होगी। समानता केवल कानून की बात न रहकर दैनिक व्यवहार का हिस्सा बने, तभी समाज सचमुच आगे बढ़ेगा।

चरण 3: निष्कर्ष नारी की प्रगति का आधार शिक्षा, आत्मनिर्भरता, समान अवसर और परिवार तथा समाज की साझा जिम्मेदारी है।

त्वरित सुझाव: निबंध में उपलब्धियों के साथ शेष बाधाएँ भी लिखें और अंत में व्यावहारिक उपाय सुझाएँ।

3(ग). मंगल पर बसेरे के सपने देखते हमारे वैज्ञानिक [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वैज्ञानिक कल्पना को विवेकपूर्ण तर्क, खोज की भावना और मानवीय जिम्मेदारी के साथ जोड़कर विषय का विस्तार करना अपेक्षित है।
- निबंध की संगति के लिए भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार को एक केंद्रीय विचार से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना आरंभ में अंतरिक्ष के प्रति जिज्ञासा रखें। फिर मंगल के अध्ययन, संभावित लाभ और जीवन बसाने की कठिनाइयाँ बताएँ। अंत में वैज्ञानिक प्रयासों के साथ पृथ्वी के संरक्षण का संकल्प जोड़ें। शीर्षक स्पष्ट रखें और प्रत्येक अनुच्छेद में एक मुख्य विचार विकसित करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध मंगल पर बसेरे के सपने देखते हमारे वैज्ञानिक

आकाश में चमकते ग्रह मनुष्य को सदा आकर्षित करते रहे हैं। जिज्ञासा ने उसे दूरबीन बनाने, अंतरिक्षयान भेजने और दूसरे ग्रहों को समझने की प्रेरणा दी। इसी खोजयात्रा में मंगल पर मानव बस्ती का सपना जन्मा है। हमारे वैज्ञानिक इस सपने को ज्ञान, परिश्रम और प्रयोग की कसौटी पर परख रहे हैं।

मंगल का अध्ययन केवल वहाँ घर बनाने की कल्पना नहीं है। इससे ग्रहों की उत्पत्ति, जल की संभावनाओं और जीवन के अनुकूल परिस्थितियों को समझने में सहायता मिल सकती है। भारत के वैज्ञानिक भी अंतरिक्ष अनुसंधान द्वारा अपनी क्षमता का विस्तार कर रहे हैं। ऐसे प्रयास युवाओं में विज्ञान के प्रति रुचि, प्रश्न पूछने का साहस और कठिन समस्याओं का समाधान खोजने की लगन उत्पन्न करते हैं।

परंतु मंगल पर बसना सरल नहीं है। वहाँ मनुष्य के साँस लेने योग्य वातावरण का अभाव है। तीखी ठंड, विकिरण, भोजन और ऊर्जा की व्यवस्था तथा लंबी यात्रा जैसी चुनौतियाँ सामने हैं। सुरक्षित निवास, जल का उपयोग और स्वास्थ्य की रक्षा के लिए अनेक सफल परीक्षण आवश्यक होंगे। इसलिए संभावना और सिद्ध उपलब्धि के बीच अंतर समझना चाहिए। वैज्ञानिक सपने देखते हैं, किंतु वे प्रमाण और सावधानी के साथ आगे बढ़ते हैं।

अंतरिक्ष अनुसंधान में सहयोग और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। इसके लाभ मानव समाज तक पहुँचने चाहिए। दूसरे ग्रह पर जीवन की खोज हमें अपनी पृथ्वी का मूल्य भी समझाती है। यहाँ की हवा, पानी और जैव विविधता की रक्षा हमारा तत्काल कर्तव्य है। मंगल का सपना तभी सार्थक होगा जब वह ज्ञान बढ़ाए, मानवता को जोड़े और पृथ्वी के प्रति हमारी जिम्मेदारी को गहरा करे।

चरण 3: निष्कर्ष मंगल पर बसेरे की कल्पना वैज्ञानिक शोध का प्रेरक लक्ष्य है; उसकी दिशा प्रमाण, सावधानी, सहयोग और मानव कल्याण से तय होनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: मंगल पर बसने को भविष्य की संभावना लिखें; कल्पना को पूरी हो चुकी वैज्ञानिक उपलब्धि की तरह प्रस्तुत न करें।

3(घ). साहित्य समाज का दर्पण [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस विषय में साहित्य और सामाजिक जीवन के संबंध को उदाहरणों तथा आलोचनात्मक दृष्टि से स्पष्ट करना अपेक्षित है।
- निबंध की संगति के लिए भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार को एक केंद्रीय विचार से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना पहले साहित्य और समाज का संबंध स्थापित करें। फिर सामाजिक चित्रण और परिवर्तनकारी प्रभाव के उदाहरण दें। अंत में बताएँ कि साहित्य जीवन का कलात्मक और संवेदनशील पुनर्सृजन भी है। शीर्षक स्पष्ट रखें और प्रत्येक अनुच्छेद में एक मुख्य विचार विकसित करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध साहित्य समाज का दर्पण

मनुष्य समाज में जीता है और अपने अनुभवों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। इन्हीं अनुभवों की संवेदनशील और कलात्मक अभिव्यक्ति साहित्य बनती है। किसी युग की रचनाएँ पढ़कर हम उस समय की मान्यताओं, संघर्षों, आशाओं और जीवनशैली को समझ

सकते हैं। इसी अर्थ में साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है।

कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक में सामान्य मनुष्य का जीवन अनेक रूपों में सामने आता है। किसान का श्रम, मजदूर की कठिनाई, स्त्री की स्थिति, जातिगत भेदभाव और पारिवारिक संबंध साहित्य के विषय बनते हैं। प्रेमचंद की रचनाएँ ग्रामीण जीवन, गरीबी और सामाजिक अन्याय को उजागर करती हैं। कबीर की वाणी रूढ़ियों और बाहरी आडंबर पर प्रश्न उठाती है। ऐसे साहित्य से समाज की केवल बाहरी तस्वीर नहीं, उसके भीतर की पीड़ा और आकांक्षा भी दिखाई देती है।

लेकिन साहित्य निष्क्रिय दर्पण मात्र नहीं है। लेखक घटनाओं का चुनाव करता है और उन्हें अपनी संवेदना तथा कल्पना से नया रूप देता है। वह अन्याय की आलोचना करके पाठक के विवेक को जगाता है। किसी पात्र का दुःख पढ़ते हुए हम दूसरे मनुष्य की स्थिति समझने लगते हैं। इस प्रकार साहित्य सहानुभूति, आत्मचिंतन और परिवर्तन की प्रेरणा देता है।

समाज बदलता है तो साहित्य के विषय और अभिव्यक्ति भी बदलते हैं। आज तकनीक, पर्यावरण, अकेलापन और बदलते संबंध नई रचनाओं में दिखाई देते हैं। अच्छा साहित्य अपने समय का साक्ष्य होने के साथ मानवीय मूल्यों की रक्षा भी करता है। इसलिए साहित्य का अध्ययन हमें समाज को पहचानने, उसकी कमजोरियाँ देखने और उसे बेहतर बनाने की दृष्टि प्रदान करता है।

चरण 3: निष्कर्ष साहित्य सामाजिक यथार्थ को कलात्मक रूप देता है और संवेदना तथा विवेक जगाकर समाज के परिवर्तन में भी योगदान करता है।

त्वरित सुझाव: दर्पण की उपमा समझाने के बाद एक साहित्यिक उदाहरण दें और साहित्य की परिवर्तनकारी शक्ति भी स्पष्ट करें।

4. देश में क्षेत्रीयतावाद के कारण उत्पन्न समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र सार्वजनिक समस्या की ओर समाज तथा प्रशासन का ध्यान आकर्षित करता है। इसका स्वर विनम्र, तथ्यपरक और समाधानपरक होना चाहिए।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, समस्या का विवरण, सुझाव और समापन क्रम से आते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पत्र में क्षेत्रीय पहचान का सम्मान करते हुए संकीर्ण क्षेत्रीयतावाद की आलोचना करनी है। रोजगार में भेदभाव, प्रवासी नागरिकों की असुरक्षा और राष्ट्रीय एकता पर प्रभाव बताकर शिक्षा, संवाद और निष्पक्ष प्रशासन जैसे उपाय सुझाए जाएँ।

चरण 2: संपादक के नाम आदर्श पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली।
दिनांक : 15 मार्च, 2014
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी,
नई दिल्ली।
विषय : क्षेत्रीयतावाद से उत्पन्न समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करने के संबंध में।
महोदय,

आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं देश में बढ़ते क्षेत्रीयतावाद से उत्पन्न समस्याओं की ओर संबंधित अधिकारियों और नागरिकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अपने प्रदेश की भाषा और संस्कृति से प्रेम स्वाभाविक है, किंतु इसी आधार पर दूसरे प्रदेश के लोगों से भेदभाव करना चिंताजनक है।

कुछ स्थानों पर रोजगार और शिक्षा के अवसरों को लेकर स्थानीय तथा बाहरी लोगों के बीच तनाव बढ़ रहा है। प्रवासी श्रमिकों और

विद्यार्थियों के साथ दुर्व्यवहार से उनमें असुरक्षा पैदा होती है। क्षेत्रीय श्रेष्ठता का प्रचार सामाजिक सद्भाव को चोट पहुँचाता है। इससे व्यापार, आवागमन और विकास कार्य भी प्रभावित होते हैं तथा राष्ट्रीय एकता कमजोर पड़ती है।

इस समस्या के समाधान के लिए विद्यालयों में विविध भारतीय संस्कृतियों का परिचय दिया जाना चाहिए। अंतरराज्यीय सांस्कृतिक कार्यक्रम और संवाद बढ़ाए जाएँ। रोजगार में न्यायपूर्ण अवसर मिलें तथा हिंसा और भेदभाव करने वालों पर निष्पक्ष कार्रवाई हो। जनप्रतिनिधि भी विभाजनकारी भाषणों से बचें।

कृपया इस विषय पर लेख और संपादकीय प्रकाशित कर जनजागरण में सहयोग दें।

धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष संपादक के नाम पत्र में क्षेत्रीयतावाद से पैदा होने वाले भेदभाव, असुरक्षा और राष्ट्रीय एकता के संकट को सामने रखकर ठोस समाधान तथा प्रकाशन का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: क्षेत्रीय संस्कृति के प्रति प्रेम और दूसरे प्रदेशों के प्रति भेदभाव में अंतर स्पष्ट रखें; पत्र का अंत व्यवहार्य उपायों और प्रकाशन के अनुरोध से करें।

अथवा

4. अस्पताल में किसी रोगी के इलाज में बरती गई लापरवाही का विवरण देते हुए वरिष्ठ चिकित्साधिकारी को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वरिष्ठ चिकित्साधिकारी को शिकायत-पत्र में घटना का क्रम, रोगी की पहचान, लापरवाही का विवरण और अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट लिखी जाती है।
- भाषा शिष्ट और वस्तुनिष्ठ हो; शिकायत के साथ जाँच तथा उपचार में सुधार का अनुरोध किया जाए।

चरण 1: पत्र की रूपरेखा प्रेषक का पता और दिनांक लिखने के बाद वरिष्ठ चिकित्साधिकारी को संबोधित करें। विषय में उपचार की लापरवाही बताएँ। मुख्य भाग में रोगी, भर्ती होने का दिन, सहायता माँगने पर हुई देरी और परिणाम लिखें। अंत में अभिलेखों की जाँच तथा रोगी को उचित उपचार देने का अनुरोध करें।

चरण 2: वरिष्ठ चिकित्साधिकारी के नाम आदर्श पत्र 18, शांति विहार
जयपुर।
दिनांक : 15 मार्च, 2014

सेवा में,
वरिष्ठ चिकित्साधिकारी,
राजकीय जिला अस्पताल,
जयपुर।

विषय : रोगी के उपचार में बरती गई लापरवाही की जाँच के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके अस्पताल में भर्ती अपने पिता श्री रामकुमार के उपचार में हुई लापरवाही की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। उन्हें 13 मार्च की शाम तेज बुखार और साँस लेने में कठिनाई के कारण चिकित्सा वार्ड में भर्ती कराया गया था। प्रारंभिक परीक्षण के बाद दवाएँ देने और नियमित निगरानी का निर्देश दिया गया था।

रात में उनकी स्थिति बिगड़ने पर हमने ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों से कई बार सहायता माँगी, किंतु चिकित्सक को समय पर नहीं बुलाया गया। निर्धारित दवा देने में भी देरी हुई। बार-बार आग्रह करने के बाद चिकित्सक आए और उपचार आरंभ हुआ। इस विलंब से रोगी की

परेशानी बढ़ी और परिवार को अत्यधिक मानसिक तनाव सहना पड़ा।

आपसे अनुरोध है कि रोगी के उपचार-अभिलेख, दवा देने के समय और संबंधित कर्मचारियों की ड्यूटी का परीक्षण कर निष्पक्ष जाँच कराएँ। दोष सिद्ध होने पर उचित कार्रवाई की जाए। साथ ही मेरे पिता को आवश्यक उपचार और नियमित चिकित्सकीय निगरानी उपलब्ध कराई जाए।

भविष्य में ऐसी घटना रोकने के लिए रात्रिकालीन व्यवस्था तथा आपातकालीन सहायता की निगरानी भी सुनिश्चित करें। आशा है आप शीघ्र कार्रवाई करेंगे।

धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार
रोगी का पुत्र

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में उपचार में हुई देरी का क्रमबद्ध विवरण देकर वरिष्ठ चिकित्साधिकारी से निष्पक्ष जाँच, आवश्यक उपचार और व्यवस्था में सुधार का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत में अपमानजनक भाषा से बचें; घटना का समय, लापरवाही और अपेक्षित कार्रवाई अलग-अलग स्पष्ट करें।

5(क)(i). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'फोन इन' क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार प्रस्तुति में घटनास्थल की ताजा जानकारी दर्शकों तक पहुँचाने के लिए संवाददाता और स्टूडियो के बीच संपर्क स्थापित किया जाता है।
- फोन इन में संवाददाता टेलीफोन के माध्यम से सीधे जुड़कर जानकारी देता है।

चरण 1: प्रस्तुति की प्रक्रिया पहचानें समाचार वाचक किसी घटना की जानकारी लेने के लिए घटनास्थल पर मौजूद संवाददाता से टेलीफोन पर संपर्क करता है। संवाददाता की आवाज प्रसारण में सुनाई जाती है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर 'फोन इन' वह समाचार-प्रस्तुति प्रक्रिया है जिसमें संवाददाता घटनास्थल से टेलीफोन द्वारा स्टूडियो से जुड़कर ताजा जानकारी देता है और समाचार वाचक के प्रश्नों के उत्तर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष फोन इन में संवाददाता टेलीफोन द्वारा समाचार वाचक से सीधे जुड़कर घटना की ताजा सूचना देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में टेलीफोन द्वारा सीधा संपर्क और घटनास्थल की ताजा जानकारी—ये दोनों बातें अवश्य लिखें।

5(क)(ii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

पत्रकारिता में 'बीट' शब्द का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-संकलन की नियमित व्यवस्था में संवाददाताओं को अलग-अलग विषय या कार्यक्षेत्र सौंपे जाते हैं।
- ऐसा निर्धारित क्षेत्र बीट कहलाता है; इसमें पत्रकार नियमित संपर्क और सूचनास्रोत विकसित करता है।

चरण 1: कार्यविभाजन समझें समाचार संस्थान किसी संवाददाता को शिक्षा, खेल, अपराध या राजनीति जैसे क्षेत्र की नियमित खबरें

जुटाने का दायित्व देता है। इससे वह उस क्षेत्र की गतिविधियों पर लगातार नजर रखता है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर पत्रकारिता में 'बीट' वह निश्चित विषय या कार्यक्षेत्र है जिसकी खबरें जुटाने और नियमित रिपोर्टिंग करने की जिम्मेदारी किसी संवाददाता को सौंपी जाती है; जैसे शिक्षा या अपराध बीट।

चरण 3: निष्कर्ष बीट संवाददाता को समाचार-संकलन और रिपोर्टिंग के लिए सौंपा गया निश्चित क्षेत्र है।

त्वरित सुझाव: बीट की परिभाषा में निर्धारित कार्यक्षेत्र और नियमित रिपोर्टिंग लिखें; शिक्षा या अपराध का एक उदाहरण जोड़ें।

5(क)(iii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

सम्पादकीय में लेखक का नाम क्यों नहीं होता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर समाचार-पत्र के संस्थागत दृष्टिकोण और नीति को व्यक्त करता है।
- इसकी जिम्मेदारी पूरे समाचार-पत्र की होती है; इसे व्यक्तिगत विचार-लेख की तरह लेखक के नाम से प्रस्तुत नहीं किया जाता।

चरण 1: संपादकीय की प्रकृति समझें संपादकीय में समसामयिक विषय का विश्लेषण और उस पर समाचार-पत्र की राय दी जाती है। उसे लिखने वाला व्यक्ति कोई भी हो, प्रकाशित विचार पत्र की ओर से प्रस्तुत होते हैं।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर संपादकीय में लेखक का नाम इसलिए नहीं होता क्योंकि वह किसी व्यक्ति की निजी राय के बजाय समाचार-पत्र की नीति और उसके संस्थागत दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी जिम्मेदारी समाचार-पत्र की होती है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय समाचार-पत्र का सामूहिक और संस्थागत मत है, इसलिए उसमें व्यक्तिगत लेखक का नाम नहीं दिया जाता।

त्वरित सुझाव: संपादकीय को व्यक्तिगत लेख से अलग पहचानें; नाम न होने का कारण समाचार-पत्र के संस्थागत मत से जोड़ें।

5(क)(iv). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्वतन्त्र पत्रकार किसे कहा जाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न पत्रकारिता में रोजगार और कार्यपद्धति के आधार पर स्वतंत्र पत्रकार की पहचान पर केंद्रित है।
- स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचार संस्था का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता; वह अलग-अलग माध्यमों के लिए सामग्री तैयार कर सकता है।

चरण 1: संस्थागत स्थिति पहचानिए स्वतंत्र पत्रकार का किसी एक समाचारपत्र, पत्रिका या समाचार माध्यम से स्थायी कर्मचारी के रूप में बँधा होना आवश्यक नहीं है। वह अपनी रुचि और विशेषज्ञता के अनुसार विषय चुनकर समाचार, रिपोर्ट या लेख तैयार करता है।

चरण 2: पारिश्रमिक और कार्य बताइए वह अपनी रचनाएँ विभिन्न समाचारपत्रों, पत्रिकाओं या अन्य समाचार माध्यमों को देता है और प्रकाशित अथवा स्वीकृत सामग्री के लिए निर्धारित पारिश्रमिक प्राप्त करता है। इस प्रकार उसकी स्वतंत्रता का संबंध नौकरी की व्यवस्था से है; तथ्य-जाँच तथा पत्रकारिता की नैतिक जिम्मेदारियाँ उस पर भी लागू होती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जो पत्रकार किसी एक समाचार संस्था का नियमित कर्मचारी बने बिना विभिन्न समाचारपत्रों, पत्रिकाओं अथवा अन्य माध्यमों के लिए स्वतंत्र रूप से सामग्री लिखता और उसके बदले पारिश्रमिक पाता है, उसे स्वतंत्र पत्रकार कहते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किसी एक संस्था की नियमित नौकरी से स्वतंत्रता और विभिन्न माध्यमों के लिए पारिश्रमिक पर लेखन, दोनों बातें लिखिए।

5(क)(v). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्तम्भ लेखन से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न समाचारपत्र या पत्रिका में नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली वैचारिक लेखन-विधा की पहचान करता है।
- स्तंभ में किसी विषय पर लेखक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण और विशिष्ट शैली प्रमुख होते हैं।

चरण 1: नियमितता और स्थान समझिए समाचारपत्र अथवा पत्रिका में किसी निश्चित शीर्षक के अंतर्गत प्रायः निर्धारित स्थान पर नियमित अंतराल से प्रकाशित लेखन को स्तंभ लेखन कहा जाता है। इसके पाठक उस शीर्षक और लेखक से परिचित होते हैं तथा अगली प्रस्तुति की प्रतीक्षा करते हैं।

चरण 2: विषय और दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए स्तंभकार सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा अन्य समसामयिक विषयों पर अपने विचार, टिप्पणी या विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उसकी विशिष्ट भाषा और निजी दृष्टि स्तंभ को पहचान देती है। इसलिए केवल किसी समाचार का तथ्यात्मक विवरण दे देना स्तंभ लेखन की पूरी पहचान नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचारपत्र या पत्रिका में निश्चित शीर्षक और स्थान के अंतर्गत नियमित रूप से किसी विषय पर लेखक के विशिष्ट दृष्टिकोण से विचार या टिप्पणी प्रस्तुत करना स्तंभ लेखन कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में नियमित प्रकाशन, निश्चित शीर्षक या स्थान तथा लेखक के निजी दृष्टिकोण को अवश्य जोड़िए।

5(ख). 'केदारनाथ आपदा : प्रकृति का कोप' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में शीर्षक, लेखक का नाम, विषय का विवेचन और तर्कपूर्ण समापन प्रस्तुत किया जाता है।
- प्राकृतिक आपदा का विवेचन करते समय प्राकृतिक कारणों के साथ मानवीय हस्तक्षेप और बचाव के उपाय भी स्पष्ट किए जाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दिया जाएगा। आरंभ में केदारनाथ की आपदा का परिचय, मध्य में प्राकृतिक कारण और अनियोजित विकास के प्रभाव तथा अंत में पर्यावरण-संगत विकास और आपदा-तैयारी का संदेश रखा जाएगा। भाषा संवेदनशील और तथ्यपरक होगी; बिना आधार के आँकड़े नहीं दिए जाएँगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख केदारनाथ आपदा : प्रकृति का कोप

लेखक : अजय कुमार

प्रकृति जीवन देती है, पर उसके संतुलन की उपेक्षा विनाश का कारण बन सकती है। जून 2013 में उत्तराखंड के केदारनाथ क्षेत्र में आई भीषण आपदा ने इसी कटु सत्य का अनुभव कराया। भारी वर्षा, अचानक उमड़े जल और मलबे के प्रवाह ने तीर्थक्षेत्र तथा आसपास की बस्तियों में भारी तबाही मचाई। अनेक लोगों की जान गई और हजारों परिवारों का जीवन संकट में पड़ गया।

इस त्रासदी को केवल प्रकृति का क्रोध मान लेना पर्याप्त नहीं है। हिमालय का पर्यावरण अत्यंत संवेदनशील है। नदियों के किनारे अनियंत्रित निर्माण, वनस्पति का विनाश और पर्यटन का बढ़ता दबाव प्राकृतिक जोखिम को और गंभीर बनाते हैं। जब नदी के प्रवाह-क्षेत्र में भवन खड़े किए जाते हैं, तब उफनता पानी अपने साथ अधिक जनहानि और संपत्ति की क्षति लाता है। विकास की योजना बनाते समय पर्वतीय भूगोल की सीमाओं को समझना आवश्यक है।

संकट के समय बचावकर्मियों, सेना, स्थानीय लोगों और स्वयंसेवकों की सेवा ने मानवता में विश्वास जगाया। फिर भी केवल आपदा के बाद सहायता पहुँचाना पर्याप्त नहीं है। मौसम की चेतावनी, सुरक्षित यात्रा-व्यवस्था, यात्रियों की संख्या का विवेकपूर्ण प्रबंधन और स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण देकर जोखिम घटाया जा सकता है। नदी-तटों तथा असुरक्षित ढलानों पर निर्माण रोका जाना चाहिए। वनों का संरक्षण और वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित योजनाएँ भी अनिवार्य हैं।

केदारनाथ की त्रासदी हमें सिखाती है कि प्रकृति को पराजित करने की मानसिकता छोड़कर उसके साथ संतुलन बनाना होगा। श्रद्धा, पर्यटन

और विकास तभी सार्थक हैं, जब मनुष्य का जीवन तथा पर्यावरण दोनों सुरक्षित रहें। यह आपदा हमारी सामूहिक जिम्मेदारी पहचानने की गंभीर चेतावनी है।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख केदारनाथ की त्रासदी को प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय हस्तक्षेप, दोनों के संदर्भ में समझाते हुए सुरक्षित तथा पर्यावरण-संगत विकास का आग्रह करता है।

त्वरित सुझाव: आपदा पर आलेख में संवेदना के साथ कारण और ठोस बचाव-उपाय लिखिए; अप्रमाणित मृत्यु-संख्या या मनगढ़ंत घटनाएँ न जोड़िए।

अथवा

5(ख). 'बढ़ती हुई सुविधाएँ और घटता हुआ स्वास्थ्य' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में समसामयिक समस्या का परिचय, कारणों का विवेचन और व्यवहारिक समाधान आवश्यक हैं।
- स्वास्थ्य पर तकनीकी सुविधाओं का प्रभाव उनके उपयोग की मात्रा, शारीरिक सक्रियता और जीवनशैली पर निर्भर करता है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक और लेखक के नाम के बाद सुविधाओं के विस्तार का परिचय दिया जाएगा। आगे गतिहीन दिनचर्या, असंतुलित भोजन और मानसिक दबाव की चर्चा होगी। अंत में सुविधाओं के विवेकपूर्ण उपयोग, व्यायाम और अनुशासित दिनचर्या का प्रस्ताव रखा जाएगा।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख बढ़ती हुई सुविधाएँ और घटता हुआ स्वास्थ्य

लेखक : अजय कुमार

आज मनुष्य के पास आराम और समय बचाने के अनगिनत साधन हैं। घर के उपकरण, वाहन, मोबाइल और इंटरनेट ने जीवन की अनेक कठिनाइयाँ दूर कर दी हैं। फिर भी यह चिंताजनक है कि सुविधाओं के विस्तार के साथ स्वास्थ्य के प्रति हमारी लापरवाही भी बढ़ रही है। जिस तकनीक से बचा समय हमें स्वस्थ जीवन के लिए मिल सकता था, वह अक्सर लगातार बैठने और स्क्रीन देखने में बीत जाता है।

पहले अनेक दैनिक कार्यों में स्वाभाविक रूप से शारीरिक परिश्रम होता था। अब छोटी दूरी के लिए वाहन लेना, सीढ़ियों की जगह लिफ्ट चुनना और घंटों बैठे रहना सामान्य हो गया है। इसके साथ अनियमित भोजन, अत्यधिक तला-भुना खाना और पर्याप्त नींद का अभाव समस्या को गंभीर बनाते हैं। शरीर की निष्क्रियता तथा अव्यवस्थित दिनचर्या से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य भी ध्यान माँगता है। हर समय उपलब्ध रहने का दबाव, लगातार आने वाले संदेश और दूसरों के जीवन से तुलना मन को विश्राम नहीं लेने देते। परिवार के सदस्यों का साथ बैठकर बातचीत करना भी कई घरों में कम हो रहा है। सुविधा तभी लाभदायक है, जब वह जीवन को संतुलित बनाए।

समाधान सुविधाएँ त्यागना नहीं, उनका समझदारी से उपयोग करना है। रोज टहलना, खेलना, योग करना और लंबे समय तक बैठने के बीच उठना आवश्यक है। संतुलित भोजन, नियमित नींद तथा मनोरंजन के लिए स्क्रीन का सीमित उपयोग अपनाया जा सकता है। बच्चों को खुले मैदान और परिवार को साझा समय मिलना चाहिए। विद्यालयों तथा कार्यस्थलों पर भी सक्रिय दिनचर्या को प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

स्वस्थ शरीर और प्रसन्न मन से बढ़कर कोई सुविधा नहीं है। साधन हमारे सहायक बनें, हमारे जीवन के संचालक नहीं। यदि हम आराम के साथ सक्रियता और तकनीक के साथ अनुशासन जोड़ें, तो बढ़ती सुविधाएँ घटते स्वास्थ्य के बजाय बेहतर जीवन का आधार बन सकती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख सुविधाओं के विवेकपूर्ण उपयोग, शारीरिक सक्रियता, संतुलित भोजन और पर्याप्त विश्राम के माध्यम से स्वस्थ जीवन का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: विषय को स्पष्ट करने के लिए सुविधा, उससे बनने वाली आदत और स्वास्थ्य पर प्रभाव का संबंध दिखाइए; अंत में अपनाए जा सकने वाले उपाय दीजिए।

6. 'बच्चों का छिनता बचपन' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय संवेदना, रोचक आरंभ और जीवन के सहज दृश्यों के सहारे प्रस्तुत करता है।
- इस विषय में बच्चों से खेल, विश्राम, सुरक्षा और सहज विकास के अवसर छिनने के कारण, प्रभाव तथा समाधान सामने लाने हैं।

चरण 1: प्रस्तुति और सामग्री की योजना बनाएँ आकर्षक शीर्षक और लेखक के नाम के बाद किसी बच्चे के दैनिक जीवन के दृश्य से शुरुआत करें। फिर पढ़ाई के असंतुलित दबाव, बालश्रम और अकेलेपन को जोड़ें। अंत में परिवार, विद्यालय और समाज की जिम्मेदारी स्पष्ट करें। अप्रमाणित आँकड़े या किसी वास्तविक व्यक्ति के नाम पर काल्पनिक कथन न जोड़ें।

चरण 2: पूरा फ़ीचर लिखें **बस्तों और बोझ के बीच खोता बचपन**

लेखक : एक विद्यार्थी

सुबह का सूरज अभी पूरी तरह निकला भी नहीं कि किसी बच्चे की स्कूल बस आ जाती है। कहीं उसी उम्र का दूसरा बच्चा चाय की दुकान पर गिलास धो रहा होता है। एक के कंधे पर भारी बस्ता है, दूसरे पर परिवार की रोजी का बोझ। दोनों की आँखों में खेल का मैदान बसता है, पर हाथों में उसके लिए समय नहीं।

बचपन केवल उम्र का एक पड़ाव नहीं, जिज्ञासा, कल्पना और बेफिक्री का संसार है। मिट्टी से आकृतियाँ बनाना, दोस्तों के साथ दौड़ना और बिना डर प्रश्न पूछना भी बच्चे के विकास का हिस्सा है। लेकिन लगातार बढ़ती प्रतियोगिता ने कई घरों में बच्चे की हर गतिविधि को उपलब्धि की दौड़ बना दिया है। विद्यालय के बाद कोचिंग और फिर अतिरिक्त अभ्यास में शाम बीत जाती है। खेल को समय की बरबादी मान लिया जाता है।

गरीबी से जूझते बच्चों की परेशानी और भी गहरी है। काम की मजबूरी उनकी शिक्षा रोकती है और असुरक्षित परिस्थितियाँ स्वास्थ्य तथा आत्मविश्वास को चोट पहुँचाती हैं। दूसरी ओर, अकेलापन और पर्दे पर लगातार बीतता समय भी बच्चों को खुले वातावरण और आत्मीय बातचीत से दूर कर सकता है।

अभिभावक बच्चों की रुचियाँ सुनें, तुलना घटाएँ और उनके साथ समय बिताएँ। विद्यालय सीखने को आनंद से जोड़ें तथा खेल और कला को स्थान दें। समाज बालश्रम रोकने और जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा से जोड़ने की जिम्मेदारी निभाए।

बच्चों को सफल बनाने की चाह में उनका वर्तमान मत छीनिए। उन्हें सुरक्षित आँगन, स्नेह और खेलने का अवसर मिलेगा, तभी उनका भविष्य भी सचमुच उजला होगा।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर में रोजमर्रा के दृश्य से समस्या उभरती है, उसके सामाजिक कारण स्पष्ट होते हैं और बचपन लौटाने के लिए व्यावहारिक उपाय सामने आते हैं।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत बच्चे के जीवन के एक दृश्य से करें; आगे कारण और असर जोड़कर अंत में ठोस उपाय दें।

अथवा

6. 'शिक्षा का बाज़ारीकरण' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर सामाजिक प्रश्न को सहज, रोचक और संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करता है; शीर्षक, लेखक का नाम और विषय का मानवीय पक्ष इसकी प्रस्तुति को प्रभावी बनाते हैं।
- शिक्षा के बाज़ारीकरण में लाभ और खरीदने की क्षमता के आधार पर शिक्षा की उपलब्धता तय होने की प्रवृत्ति, उसके प्रभाव और सुधार के उपाय स्पष्ट करने हैं।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की रूपरेखा बनाएँ शुरुआत विद्यालय में प्रवेश चाहने वाले परिवार की चिंता से करें। इसके बाद महँगी फीस, शिक्षा को प्रतिष्ठा की वस्तु बना देने वाले प्रचार और अवसरों की असमानता समझाएँ। शिक्षा की गुणवत्ता के लिए उचित संसाधनों की

आवश्यकता तथा केवल लाभ कमाने की प्रवृत्ति के बीच अंतर रखें। अंत में सुलभ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आग्रह करें।

चरण 2: पूरा फ़ीचर लिखें **जब शिक्षा पर लगने लगा मूल्य का ठप्पा**

लेखक : एक विद्यार्थी

विद्यालय के बाहर चमकता विज्ञापन बेहतर भविष्य का वादा करता है। भीतर प्रवेश की जानकारी लेने पहुँचे माता-पिता फीस की सूची देखकर अपनी आय का हिसाब लगाने लगते हैं। बच्चा नए मित्रों और किताबों का सपना देख रहा है, जबकि परिवार सोच रहा है कि उसकी पढ़ाई का खर्च कैसे उठेगा। शिक्षा का बाज़ारीकरण इसी अंतर को गहरा करता है।

शिक्षा मनुष्य को समझ, विवेक और आगे बढ़ने के अवसर देती है। जब उसका मूल्य मुख्यत: फीस, भव्य भवन और प्रचार से आँका जाने लगे, तो सीखने का असली उद्देश्य पीछे छूटने लगता है। महँगे विद्यालय, प्रवेश की तैयारी और कोचिंग का खर्च अनेक परिवारों पर दबाव डालता है। जिनके पास साधन कम हैं, उन्हें समान अवसर पाने में कठिनाई होती है।

इस प्रवृत्ति का असर बच्चों पर भी पड़ता है। अंक और प्रवेश की दौड़ में जिज्ञासा, रचनात्मकता तथा सामाजिक संवेदना उपेक्षित हो सकती हैं। शिक्षक और विद्यार्थी का आत्मीय संबंध भी केवल परिणाम देने और पाने के संबंध में बदलने लगता है। हर चमकदार सुविधा अच्छी शिक्षा की गारंटी नहीं होती।

अच्छे अध्यापक, पुस्तकालय और प्रयोगशालाएँ आवश्यक हैं; उनके लिए संसाधन भी चाहिए। चिंता तब होती है जब लाभ कमाना शिक्षा के उद्देश्य से बड़ा बन जाए और शुल्क में पारदर्शिता न रहे।

समाधान के लिए सरकारी विद्यालयों को मजबूत करना, शुल्क व्यवस्था को पारदर्शी बनाना और जरूरतमंद विद्यार्थियों को सहायता देना जरूरी है। अभिभावक प्रचार के बजाय शिक्षण और वातावरण को परखें। शिक्षा अवसर खोलने का माध्यम बनी रहे, परिवार की आर्थिक हैसियत का प्रमाणपत्र नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर शिक्षा को व्यापार में बदलने की प्रवृत्ति के मानवीय और सामाजिक प्रभाव बताता है तथा सुलभता, गुणवत्ता और पारदर्शिता को समाधान के रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: बाज़ारीकरण के विषय में फीस का उल्लेख करके न रुकें; अवसरों की असमानता और सीखने के उद्देश्य पर उसका प्रभाव भी जोड़ें।

7. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बैचेन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक –
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं
महज एक धागे के सहारे ।

प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [8 अंक]

7(क). 'वे अपने साथ लाते हैं कपास' – 'वे' कौन हैं ? साथ में कपास लाने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में कवि पतंग के पीछे उत्साह से दौड़ते बच्चों की सहजता, कोमलता और शरीर के लचीलेपन का चित्रण करता है।

- कपास का प्रयोग वास्तविक वस्तु के अर्थ में नहीं, बच्चों के स्वभाव और शरीर की मृदुता के प्रतीक के रूप में हुआ है।

चरण 1: सर्वनाम का संदर्भ पहचानें यहाँ 'वे' से आशय पतंग उड़ाने और लूटने वाले बच्चों से है। आगे उनके बेसुध दौड़ने, पेंग भरने और छतों के किनारों तक पहुँचने के वर्णन से यह संदर्भ स्पष्ट होता है। इसलिए 'वे' किसी वस्तु या पतंग के लिए प्रयुक्त नहीं है।

चरण 2: कपास का प्रतीकात्मक आशय समझाएँ बच्चों का जन्म से कपास साथ लाना उनके स्वभाव की निर्मलता तथा शरीर की कपास जैसी हल्की, मुलायम और लचीली बनावट का संकेत है। वे कठोर छत पर भी इतनी सहजता और फुर्ती से दौड़ते हैं कि छत उनके लिए मानो नरम हो जाती है। यह बालसुलभ ऊर्जा और कोमलता की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है; इसका अर्थ सचमुच कपास लेकर पैदा होना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष 'वे' पतंग के पीछे दौड़ते बच्चे हैं। कपास साथ लाने का तात्पर्य उनकी जन्मजात कोमलता, हल्केपन और लचीलेपन से है।

त्वरित सुझाव: पहले 'वे' का संदर्भ स्पष्ट करें, फिर कपास के गुणों को बच्चों के शरीर और स्वभाव से जोड़कर अर्थ लिखें।

7(ख). पतंग लूटते बच्चों की तुलना डाल से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में 'डाल की तरह लचीले वेग' द्वारा बच्चों की गति और शारीरिक लचीलेपन को सजीव बनाया गया है।
- उपमा समझाते समय उपमेय और उपमान का समान गुण बताना आवश्यक है; यहाँ बच्चे और डाल लचीलेपन के कारण जुड़े हैं।

चरण 1: तुलना का आधार बताएँ पतंग लूटते बच्चों का शरीर डाल की तरह लचीला होता है। जिस प्रकार डाल हवा के झोंके से झुकती और लहराती है, उसी प्रकार बच्चे दौड़ते समय शरीर को तेजी से मोड़ते और सँभालते हैं। तुलना उनके आकार या स्थिर रहने के कारण नहीं, उनकी लोच और गति की सहजता के कारण की गई है।

चरण 2: पद्यांश में उसकी सार्थकता समझाएँ पतंग के रोमांच में बच्चे पेंग भरते हुए छतों के खतरनाक किनारों तक पहुँच जाते हैं। उनके शरीर की फुर्ती, संतुलन और लचक इस गतिविधि को संभव बनाते हैं। 'डाल की तरह लचीले वेग' में कवि ने इसी सहज शारीरिक गति को दृश्य रूप दिया है। इससे बच्चों की जीवंतता और निर्भीक उमंग का प्रभाव भी उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों की तुलना डाल से इसलिए की गई है कि उनका शरीर और उनकी गति डाल के समान लचीले हैं; वे दौड़ते हुए सहजता से झुकते, मुड़ते और संतुलन सँभालते हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना का उत्तर लिखते समय केवल उपमा का नाम न दें; डाल का लचीलापन बच्चों की गति में कैसे दिखता है, यह भी बताएँ।

7(ग). दिशाओं को मृदंगों की तरह बजाने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मृदंग लय और ध्वनि का वाद्य है; उसकी उपमा से कवि बच्चों की चंचल गतिविधियों को संगीतपूर्ण बनाता है।
- काव्यांश में दिशाओं को बजाना कल्पनापूर्ण अभिव्यक्ति है, जो बालकों के उत्साह और चारों ओर फैलती हलचल का अनुभव कराती है।

चरण 1: मृदंग की उपमा का आशय बताएँ पतंग उड़ाते और लूटते बच्चे इधर-उधर पूरे उत्साह से दौड़ते हैं। उनके पैरों की थाप, आवाजें और चहल-पहल से आसपास का वातावरण गूँज उठता है। कवि को उनकी यह गति ऐसी लगती है मानो वे दिशाओं को मृदंग की तरह बजा रहे हों। इसका अर्थ दिशाओं को वास्तव में कोई वाद्य बनाकर बजाना नहीं है।

चरण 2: बच्चों की उमंग से बिंब को जोड़ें बच्चों का उल्लास केवल उनके भीतर सीमित नहीं रहता; उनकी क्रीड़ा पूरे परिवेश को जीवंत और लयमय बना देती है। 'बेसुध' दौड़ना और पेंग भरना उनके उसी उन्मुक्त आनंद को व्यक्त करते हैं। दिशाओं का उल्लेख करके कवि इस उत्साह का चारों ओर विस्तार दिखाता है। मृदंग का बिंब गति, ध्वनि और आनंद को एक साथ अनुभव कराता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि बच्चों के दौड़ने, पैरों की थाप और आनंदभरी चहल-पहल से चारों दिशाएँ मृदंग की ध्वनि की तरह गूँजती और उल्लास से भर जाती हैं।

त्वरित सुझाव: मृदंग के बिंब को पैरों की थाप, चारों ओर की गूँज और बच्चों के उल्लास से जोड़ें; इसे वास्तविक घटना न समझें।

7(घ). छतों के किनारों से गिरने से उन्हें कौन बचाता है और कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत पंक्तियाँ बच्चों के शारीरिक संतुलन और पतंग उड़ाने के रोमांच का संबंध बताती हैं।
- कवि ने शरीर की लय को संगीत तथा पतंग की ऊँचाइयों को सहारा देने वाली शक्ति के रूप में चित्रित किया है।

चरण 1: रक्षा करने वाली शक्ति पहचानना छतों के खतरनाक किनारों पर दौड़ते बच्चों को उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत गिरने से बचाता है। यहाँ संगीत से तात्पर्य उनके अंगों की स्वाभाविक लय, फुर्ती और संतुलन से है। उत्साह से भरे हुए भी उनके हाथ, पैर और शरीर की गति में तालमेल रहता है।

चरण 2: बचने की प्रक्रिया समझना बच्चों का ध्यान ऊँची उड़ती पतंग और उसे सँभालने वाले धागे पर केंद्रित रहता है। इसी तन्मयता में वे अपनी गति और शरीर का संतुलन साध लेते हैं। कवि कल्पना करता है कि पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ एक धागे के सहारे उन्हें थाम लेती हैं। यह बालकों के रोमांच और आत्मविश्वास का काव्यात्मक चित्र है।

चरण 3: निष्कर्ष उन्हें उनके रोमांचित शरीर की लय और संतुलन बचाते हैं; पतंग की ऊँचाई में तन्मयता इस संतुलन को सहारा देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शरीर का संगीत और पतंग की ऊँचाइयाँ, दोनों बिंबों का आशय स्पष्ट करें।

अथवा

7. आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी ।
प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [8 अंक]

7(क). कवि ने चाँद का टुकड़ा किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय और उपमान की सीधी एकता स्थापित की जाती है।
- प्रस्तुत पद्यांश में बच्चे का सौंदर्य माँ के वात्सल्य से जुड़कर व्यक्त होता है।

चरण 1: चाँद के टुकड़े की पहचान कवि ने माँ की गोद में लिए हुए छोटे बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहा है। आँगन में खड़ी माँ उसे अपने हाथों पर झुला रही है। इसलिए यहाँ चाँद का टुकड़ा आकाश का कोई वास्तविक अंश नहीं, बल्कि उस सुंदर शिशु का स्नेहपूर्ण संबोधन है।

चरण 2: तुलना का कारण स्पष्ट करना बच्चा चाँद की तरह सुंदर, कोमल और मन को आनंद देने वाला है। उसका भोला चेहरा और खिलखिलाती हँसी आकर्षक हैं। जिस प्रकार चाँद को देखकर मन प्रसन्न होता है, उसी प्रकार बच्चे को देखकर माँ आनंदित होती है। इस रूपक में कोमलता का भाव भी निहित है। यह संबोधन शिशु की सुंदरता के साथ माँ के लिए उसके अत्यंत प्रिय होने का भाव भी व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ की गोद का नन्हा बच्चा ही चाँद का टुकड़ा है, क्योंकि वह सुंदर, मनोहर और माँ के आनंद का केंद्र है।

त्वरित सुझाव: बच्चे की पहचान के साथ चाँद से जुड़े सौंदर्य और प्रियता के भाव अवश्य लिखें।

7(ख). माँ के लिए कविता में किस शब्द का प्रयोग हुआ है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में किसी विशेष संबोधन से व्यक्ति की अवस्था और भावभूमि दोनों स्पष्ट हो सकते हैं।
- उत्तर का आधार पद्यांश का गोद-भरी शब्द और माँ की क्रियाएँ हैं।

चरण 1: प्रयुक्त शब्द पहचानना कवि ने माँ के लिए गोद-भरी शब्द का प्रयोग किया है। वह अपने नन्हे बच्चे को गोद में लेकर आँगन में खड़ी है और उसे हाथों पर झुला रही है। इस प्रकार यह शब्द उसकी गोद में शिशु होने की स्थिति को सीधे व्यक्त करता है।

चरण 2: शब्द का भावार्थ समझना गोद-भरी केवल शारीरिक स्थिति का उल्लेख नहीं करता। उससे मातृत्व की तृप्ति, वात्सल्य और आनंद भी प्रकट होते हैं। बच्चे की उपस्थिति से माँ का जीवन स्नेह और उल्लास से भर गया है। उसे उछालना, झुलाना और उसकी हँसी से प्रसन्न होना इसी ममता के रूप हैं। एक छोटे शब्द में माँ और बच्चे के घनिष्ठ संबंध का सुंदर चित्र उभर आता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ को गोद-भरी कहा गया है, क्योंकि उसकी गोद में बच्चा है और उसका हृदय मातृत्व के सुख तथा वात्सल्य से भरा है।

त्वरित सुझाव: गोद-भरी का शाब्दिक अर्थ बताकर उससे व्यक्त मातृत्व के आनंद को भी जोड़ें।

7(ग). बच्चे की हँसी का कारण क्या है ? उसके गूँजने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बालक की क्रियाओं और उसकी प्रतिक्रिया से पद्यांश का भाव समझा जाता है।
- हँसी के गूँजने में ध्वनि के प्रसार के साथ वातावरण का उल्लास भी निहित है।

चरण 1: हँसी का कारण बताना माँ बच्चे को हाथों पर झुलाती है और रह-रहकर हवा में उछालती है। इस स्नेहपूर्ण खेल से बच्चे को आनंद और रोमांच मिलता है। माँ के साथ सुरक्षित खेलते हुए वह प्रसन्न होकर खिलखिला उठता है। उसकी हँसी का तत्काल कारण माँ का इसी तरह उसे झुलाना और उछालना है।

चरण 2: गूँजने का आशय समझना बच्चे की निश्छल और खुली हँसी की आवाज आँगन में चारों ओर फैल जाती है। गूँजने का तात्पर्य केवल आवाज सुनाई देना नहीं, बल्कि उस हँसी से घर-आँगन का आनंदपूर्ण हो उठना भी है। शिशु का उल्लास माँ के मन को प्रसन्न करता है और घरेलू दृश्य में जीवंतता भर देता है। इस प्रकार ध्वनि और भाव दोनों स्तरों पर आनंद का विस्तार होता है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ के झुलाने और हवा में उछालने से बच्चा हँसता है; उसकी हँसी गूँजने का अर्थ पूरे आँगन का उस आनंदमयी ध्वनि से भर उठना है।

त्वरित सुझाव: दोनों प्रश्न अलग पहचानें: पहले हँसी का कारण, फिर गूँजने का ध्वनिगत और भावगत अर्थ लिखें।

7(घ). काव्यांश के भाव को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-चित्रण में दृश्य की क्रियाओं और उनसे उत्पन्न अनुभूति को अपने शब्दों में रखा जाता है।
- इस काव्यांश का केंद्र माँ-बच्चे का आत्मीय संबंध और निश्छल आनंद है।

चरण 1: दृश्य को अपने शब्दों में रखना एक माँ अपने चाँद जैसे प्यारे शिशु को गोद में लिए आँगन में खड़ी है। वह उसे बड़े प्यार से हाथों पर झुलाती है। बीच-बीच में वह बच्चे को हवा में उछालती है। उसके इन स्नेहपूर्ण क्रियाकलापों में बच्चे को प्रसन्न करने की सहज चेष्टा दिखाई देती है।

चरण 2: भाव का विस्तार करना माँ के साथ इस खेल का आनंद लेते हुए बच्चा खिलखिलाकर हँस पड़ता है। उसकी हँसी से पूरा आँगन गूँज उठता है। माँ की ममता और शिशु की निष्कपट प्रसन्नता मिलकर एक जीवंत पारिवारिक चित्र बनाती हैं। गोद-भरी माँ मातृत्व के सुख से तृप्त है, जबकि बच्चे की हँसी उस वात्सल्य का सहज प्रत्युत्तर है। सामान्य घरेलू क्षण भी यहाँ अत्यंत सुंदर और आनंदमय बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश माँ के वात्सल्य और बच्चे की निश्छल हँसी का चित्र है, जिसमें स्नेहपूर्ण खेल से पूरा घर-आँगन उल्लास से भर जाता है।

त्वरित सुझाव: भाव-चित्र में माँ की तीन क्रियाएँ और बच्चे की प्रतिक्रिया रखकर वात्सल्य का निष्कर्ष दें।

---

8. तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया –
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया –
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर ।
नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). काव्यांश का भाव-सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकात्मक कविता में प्राकृतिक दृश्य सामाजिक परिवर्तन का भाव भी व्यक्त करता है।
- बादल की गर्जना और जागते अंकुर विनाश के बीच नई आशा का संकेत देते हैं।

चरण 1: दुख और परिवर्तन का भाव काव्यांश में संसार के सुख को अस्थिर बताया गया है, जिस पर दुख की छाया बनी रहती है। संसार का हृदय पीड़ा से दग्ध है। ऐसे में वायु के समुद्र पर तैरता बादल क्रांति की रण-नौका जैसा दिखाई देता है। उसमें नई आकांक्षाएँ भरी हैं और उसकी प्रचंडता जड़ता को तोड़ने का संकेत देती है।

चरण 2: नवजीवन की आशा स्पष्ट करना बादल की भेरी जैसी गर्जना सुनकर सोए हुए अंकुर सजग हो जाते हैं। यह चित्र पीड़ित और निष्क्रिय जीवन में चेतना तथा उत्साह के संचार को व्यक्त करता है। क्रांति बाहर से कठोर और विनाशकारी दिखाई दे सकती है, पर उसमें नई सृष्टि की संभावना छिपी है। इसी कारण कविता में दुख और संघर्ष के बीच भविष्य की आशा तथा परिवर्तन की आकांक्षा का सुंदर मेल है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य पीड़ित संसार में क्रांति द्वारा चेतना, आशा और नवजीवन के उदय की कल्पना में है।

त्वरित सुझाव: बादल की प्रचंडता को जागते अंकुरों से जोड़ें, जिससे परिवर्तन का सृजनात्मक पक्ष स्पष्ट हो।

8(ख). प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए और उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है।
- मानवीकरण में प्रकृति को मानवीय संवेदना या क्रिया प्रदान की जाती है।

चरण 1: मुख्य अलंकार पहचानना समीर-सागर में वायु को सागर का रूप दिया गया है तथा रण-तरी में बादल को युद्ध की नौका के रूप में कल्पित किया गया है। इनमें रूपक अलंकार है। कवि केवल समानता का संकेत नहीं देता, बल्कि वायु को सागर और बादल को रण-नौका मानकर व्यापक गतिशील दृश्य उपस्थित करता है।

चरण 2: सौंदर्य और अन्य प्रयोग समझना रूपक से आकाश में चलते बादल का दृश्य एक विराट संघर्ष का रूप लेता है। भेरी-गर्जन बादल की आवाज को युद्ध की भेरी से जोड़कर ओज उत्पन्न करता है। सजग सुप्त अंकुर में अंकुरों को सोने और जागने वाले प्राणियों की तरह दिखाने से मानवीकरण भी है। इन प्रयोगों से बादल की क्रांतिकारी शक्ति और अंकुरों में आने वाली नई चेतना प्रभावपूर्ण बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में समीर-सागर और रण-तरी में रूपक प्रमुख है; सजग सुप्त अंकुर में मानवीकरण से नवजीवन की चेतना मूर्त हुई है।

त्वरित सुझाव: अलंकार का नाम अकेले न लिखें; संबंधित शब्द देकर उनके भावात्मक प्रभाव की व्याख्या करें।

8(ग). काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा पर टिप्पणी में शब्दावली, ध्वनि, चित्रात्मकता और अभिव्यक्ति का प्रभाव देखा जाता है।
- काव्यांश की भाषा प्रकृति के माध्यम से क्रांति का ओजपूर्ण प्रतीकात्मक चित्र बनाती है।

चरण 1: शब्दावली और शैली पहचानना काव्यांश की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है, जिसमें समीर, दग्ध, विप्लव, आकांक्षा, गर्जन और सुप्त जैसे संस्कृतनिष्ठ शब्द प्रमुख हैं। यह शब्दावली भावों की गंभीरता और क्रांति के स्वर को प्रभावशाली बनाती है। समीर-सागर और रण-तरी जैसे सामासिक पद कम शब्दों में व्यापक दृश्य और अर्थ प्रस्तुत करते हैं।

चरण 2: अभिव्यक्ति का प्रभाव समझना भाषा चित्रात्मक, लाक्षणिक और प्रतीकात्मक है। बादल रण-नौका बनकर आता है और सोए अंकुर जाग उठते हैं, जिससे दृश्य जीवंत हो जाता है। भेरी-गर्जन जैसे पदों में ध्वनि का प्रभाव है, जो संघर्ष और जागरण का वातावरण बनाता है। मुक्तछंद की छोटी-बड़ी पंक्तियाँ भावों के उतार-चढ़ाव के अनुरूप लय देती हैं। इस प्रकार ओज, गति और संवेदना का मेल मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा संस्कृतनिष्ठ, सामासिक, चित्रात्मक और प्रतीकात्मक है; उसमें ओज तथा नाद-सौंदर्य के माध्यम से क्रांति और नवचेतना मुखर हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के लिए काव्यांश से एक शब्द या बिंब चुनकर उसका प्रभाव बताएं।

अथवा

8. सचमुच मुझे दंड दो कि हो जाऊँ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में
धुएँ के बादलों में
बिलकुल मैं लापता
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है ।
नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). काव्यांश का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में प्रिय के सर्वव्यापी प्रभाव और उस पर कवि की गहरी भावात्मक निर्भरता का चित्रण है।
- अंधकार में लुप्त होने की कामना भी प्रिय के सहारे से मुक्ति नहीं दिलाती; यही भाव कविता को मार्मिक बनाता है।

चरण 1: दंड की कामना का भाव कवि प्रिय से सचमुच ऐसा दंड चाहता है कि वह पाताल जैसी गहरी अँधेरी गुफाओं, बिलों और धुएँ के बादलों में पूरी तरह खो जाए। लापता होने की यह तीव्र इच्छा उसके अंतर्मन के द्वंद्व को व्यक्त करती है। वह अपने परिचित संसार और प्रिय के प्रभाव से दूर जाना चाहता है। अँधेरे और धुएँ के चित्र उसके मन की व्याकुलता को मूर्त बनाते हैं।

चरण 2: प्रिय पर अनिवार्य निर्भरता इस पलायन की कल्पना के साथ ही कवि स्वीकार करता है कि उस गहन अँधेरे में भी उसे प्रिय का ही सहारा मिलेगा। इस प्रकार दूर होने की इच्छा और दूर न हो सकने की विवशता साथ-साथ व्यक्त हुई हैं। प्रिय का संबंध इतना गहरा है कि कवि की चेतना से उसका अस्तित्व अलग नहीं हो सकता। स्वीकार की यह आत्मीयता तथा विरोधी भावों का मेल काव्यांश के भाव-सौन्दर्य को गहन बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौन्दर्य प्रिय से दूर जाने की इच्छा में भी उसी के अपरिहार्य सहारे की मार्मिक स्वीकृति में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौन्दर्य लिखते समय लापता होने की इच्छा को अंतिम पंक्ति में व्यक्त प्रिय के सहारे से जोड़िए।

8(ख). काव्यांश में प्रयुक्त किन्हीं दो प्रतीकों का प्रयोग सौंदर्य समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक किसी ठोस दृश्य के माध्यम से अमूर्त भावना या स्थिति का संकेत देता है।
- काव्यांश के अँधेरे और धुएँ जैसे प्रतीक कवि के मन के द्वंद्व को दृश्य रूप देते हैं।

चरण 1: पाताली अँधेरे की गुहाएँ और विवर पाताल की गहरी अँधेरी गुफाएँ और बिल ऐसी चरम एकाकी, दुर्गम और निराशाजनक मानसिक स्थिति के प्रतीक हैं जहाँ व्यक्ति संसार से पूरी तरह कट जाना चाहता है। इनकी गहराई और अँधकार कवि की लुप्त होने की तीव्र इच्छा को सजीव बनाते हैं। अमूर्त पीड़ा को ठोस स्थान का रूप देने से पाठक उस मनःस्थिति को अनुभव कर पाता है।

चरण 2: धुएँ के बादल धुएँ के बादल अस्पष्टता, घुटन और दिशाहीनता के प्रतीक हैं। धुआँ दृष्टि को ढक देता है; उसी प्रकार मानसिक उलझन व्यक्ति को स्पष्ट मार्ग नहीं देखने देती। कवि ऐसी धुँधली स्थिति में भी स्वयं को खो देना चाहता है। इन प्रतीकों के बीच प्रिय के सहारे की स्वीकृति दिखाती है कि अत्यंत कठिन और अनिश्चित दशाओं में भी उसका संबंध कवि से बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष पाताली अँधेरी गुहाएँ गहरे एकांत और निराशा को तथा धुएँ के बादल मानसिक अस्पष्टता और घुटन को प्रभावशाली ढंग से मूर्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: दो प्रतीकों का नाम भर न लिखें; हर दृश्य के साथ उसका भावगत संकेत और उसका प्रभाव भी बताइए।

8(ग). काव्यांश के भाषा-वैशिष्ट्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की खड़ी बोली भाव के अनुरूप प्रतीकात्मक और चित्रात्मक है।
- शब्दों की पुनरावृत्ति और मुक्तछंद की लय अंतर्मन की बेचैनी और आत्मीय संबोधन को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: शब्दावली और चित्रात्मकता भाषा में दंड, गुहा और विवर जैसे तत्सम शब्दों के साथ बिलकुल और लापता जैसे प्रचलित शब्द सहज रूप से आए हैं। पाताली अँधेरा और धुएँ के बादल दृश्य बिंब रचते हैं तथा मानसिक घुटन और अस्पष्टता का संकेत देते हैं। इस विविध शब्दावली से कथन गंभीर होने के साथ स्वाभाविक और संप्रेषणीय बना है।

चरण 2: लय और संबोधन की विशेषता काव्यांश मुक्तछंद में है; उसकी लय निश्चित तुक पर निर्भर नहीं है। लापता शब्द की पुनरावृत्ति पूरी तरह खो जाने की इच्छा पर बल देती है। गुहाओं में, विवरों में और बादलों में जैसे प्रयोग कथन को प्रवाह देते हैं। तुम्हारा और मुझे जैसे शब्द आत्मीय संवाद का वातावरण बनाते हैं। सीधे संबोधन और प्रतीकात्मक भाषा के मेल से कवि का भीतरी द्वंद्व प्रभावपूर्ण बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष चित्रात्मक एवं प्रतीकात्मक खड़ी बोली, मिश्रित शब्दावली, पुनरावृत्ति और मुक्तछंद की संवादात्मक लय इस काव्यांश की प्रमुख भाषागत विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा-वैशिष्ट्य में हर विशेषता के साथ काव्यांश का कोई शब्द या प्रयोग उदाहरण के रूप में जोड़िए।

9(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' इस कथन से कवि का क्या आशय है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में व्यक्ति के आंतरिक आवेग और उसकी अभिव्यक्ति के संबंध को समझना आवश्यक है।
- शीतलता और आग के विरोधी गुणों से कवि अपने संयमित कथन में छिपी प्रखरता को उजागर करता है।

चरण 1: शीतल वाणी का आशय शीतल वाणी से आशय कवि की शांत, मधुर और संयत अभिव्यक्ति से है। वह अपनी अनुभूतियों को कटु या आक्रामक भाषा में प्रकट नहीं करता। उसके स्वर में सहजता और आत्मीयता बनी रहती है। बाहरी शांति का अर्थ यह नहीं कि कवि के भीतर गहरी अनुभूति अथवा असंतोष नहीं है; वह अपने भावों को कलात्मक रूप देकर कहता है।

चरण 2: आग का आशय और दोनों का संबंध आग कवि के हृदय की तीव्र संवेदना, पीड़ा और अन्यायपूर्ण रूढ़ियों के प्रति विद्रोह का संकेत है। उसके भीतर जीवन के अनुभवों से पैदा हुआ ताप है, जो उसकी कविता को प्रभाव और ऊर्जा देता है। कवि संसार की जड़ मान्यताओं को चुपचाप स्वीकार करने वाला व्यक्ति नहीं है। वह अपनी स्वतंत्र अनुभूति के आधार पर जीता और रचता है। इसलिए मधुर वाणी के भीतर भी परिवर्तन की चाह और आत्मसम्मान की प्रखरता विद्यमान है। दोनों पदों का विरोध उस अंत:स्थिति को अधिक सजीव बनाता है। इस विरोधाभासी कथन से स्पष्ट होता है कि कवि का कोमल व्यवहार उसकी संवेदनशीलता का परिचायक है, उदासीनता का नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि उसकी वाणी शांत और मधुर है, किंतु उसके भीतर गहरी पीड़ा, तीव्र संवेदना और रूढ़ियों के विरोध की ज्वाला छिपी है।

त्वरित सुझाव: शीतल वाणी को अभिव्यक्ति का ढंग और आग को भीतर के तीव्र भाव मानकर दोनों का संबंध स्पष्ट कीजिए।

9(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

किसी रचना में भाव की प्रधानता महत्त्वपूर्ण है या भाषा की ? 'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में भाषा भाव और आशय को पाठक तक पहुँचाने का माध्यम है।
- कुँवर नारायण अभिव्यक्ति की सहजता के पक्षधर हैं; बनावटी भाषाई चमत्कार मूल बात को उलझा सकता है।

चरण 1: भाव की प्रधानता और भाषा की भूमिका रचना का मूल उद्देश्य किसी भाव, अनुभव या विचार का प्रभावपूर्ण संप्रेषण है। इसलिए भाव की प्रधानता महत्त्वपूर्ण है, पर उसे उचित भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा भाव के अनुरूप, सहज और स्पष्ट होनी चाहिए। केवल कठिन शब्दों और चमत्कारपूर्ण प्रयोगों का संग्रह रचना को सार्थक नहीं बनाता। जब भाषा अर्थ को ढकने लगती है, तब रचना पाठक से दूर हो जाती है।

चरण 2: कविता का उदाहरण और संदेश कविता में एक सीधी बात को भाषा के चक्कर में टेढ़ा कर देने का अनुभव व्यक्त हुआ है। कवि भाषा को बार-बार उलटता-पलटता और बात को सही जगह कसना चाहता है, पर अत्यधिक प्रयास से उसका स्वाभाविक रूप बिगड़ जाता है। बात की चूड़ी और पेंच का बिंब इसी स्थिति को स्पष्ट करता है। कृत्रिम कौशल दिखाने की कोशिश मूल आशय को निष्प्रभावी कर देती है। कविता सिखाती है कि भाषा का प्रयोग प्रसंग, अनुभव और भाव की माँग के अनुसार होना चाहिए; सहज बात को अनावश्यक जटिलता से बचाना चाहिए। कथ्य और भाषा के इस संतुलन से ही पाठक रचना के भाव को ग्रहण कर पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाव रचना का केंद्र है और भाषा उसका साधन। श्रेष्ठ रचना में भाषा भाव का सहज संप्रेषण करती है; उसका प्रदर्शन मूल कथ्य पर हावी नहीं होता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सीधी बात के टेढ़ा हो जाने और चूड़ी-पेंच के बिंब को भावानुकूल भाषा की आवश्यकता से जोड़िए।

9(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है – सोदाहरण प्रतिपादित कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता उषा में रंगों और ग्रामीण घरेलू उपमानों से सुबह के क्रमिक परिवर्तन का चित्र बनता है।
- गतिशीलता का आधार अँधेरे से प्रकाश तक आकाश के रंगों का बदलना और अंत में सूर्योदय होना है।

चरण 1: ग्रामीण जीवन से जुड़े उपमान प्रातःकाल का नीला आकाश नीले शंख जैसा है और भोर का नभ राख से लीपे हुए गीले चौके जैसा दिखाई देता है। यह चौका ग्रामीण घर की याद दिलाता है। काली सिल पर थोड़े लाल केसर का रंग फैलने का बिंब क्षितिज की लालिमा को मूर्त करता है। इसी तरह स्लेट पर लाल खड़िया मलने जैसी छवि आकाश के बदलते रंग को सहज परिचित वस्तुओं के माध्यम से सामने लाती है। ये उपमान गाँव के दैनिक परिवेश से जुड़े हैं।

चरण 2: दृश्य की क्रमिक गतिशीलता कविता एक ही रंग पर स्थिर नहीं रहती। नीलिमा और राख जैसे धूसर रंग से दृश्य लालिमा की ओर बढ़ता है। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब प्रकाश की उजली, जीवंत आभा का अनुभव कराता है। अंत में सूर्य के उदय के साथ उषा का जादू टूटता है। इस प्रकार रंगों, चमक और प्रकाश में क्रमिक परिवर्तन से पाठक सुबह को घटित होते देखता है। घरेलू वस्तुओं के दृश्य बिंब और सूर्योदय की यह प्रक्रिया मिलकर ग्रामीण सुबह का सजीव शब्द-चित्र रचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष उषा में चौका, सिल, केसर, स्लेट और खड़िया जैसे परिचित बिंबों के साथ आकाश के बदलते रंग तथा सूर्योदय गाँव की सुबह को गतिशील रूप देते हैं।

त्वरित सुझाव: गतिशीलता सिद्ध करने के लिए उपमान गिनाने के साथ नीले-धूसर आकाश से लालिमा और सूर्योदय तक का क्रम बताइए।

10. कभी-कभी कैसे-कैसे सन्दर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं ? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है । अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है । हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं ? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं ? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ?

नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). लेखक के मन को क्या बातें कचोटती हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- देश के प्रति दायित्व और स्वार्थ की पहचान का विवेचन पाठ के दिए गए अंश के आधार पर करना चाहिए।
- कथन के साथ उसका कारण और प्रसंग जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होता है।

चरण 1: पाठ में व्यक्त मुख्य भाव पहचानिए देश से बड़ी-बड़ी माँगें करने पर भी उसके लिए त्याग न करना लेखक को कचोटता है। लोगों का अपना स्वार्थ ही लक्ष्य बन गया है और वे दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा तो करते हैं, पर अपने आचरण को नहीं जाँचते।

चरण 2: पीड़ा का कारण स्पष्ट कीजिए लेखक इसलिए व्यथित है कि अधिकारों और सुविधाओं की माँग के अनुपात में कर्तव्यबोध नहीं दिखाई देता। जब व्यक्ति अपने स्तर पर ईमानदारी और त्याग नहीं अपनाता, तब सामूहिक सुधार की आशा अधूरी रह जाती है। लेखक का प्रश्न केवल शिकायत नहीं है, बल्कि देश के प्रति अपने योगदान पर विचार करने की प्रेरणा भी देता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को माँग और त्याग का असंतुलन तथा आत्मपरीक्षण के अभाव में बढ़ता स्वार्थ कचोटता है, क्योंकि इससे देश और समाज की दशा नहीं सुधरती।

त्वरित सुझाव: पहले बड़ी माँगों के सामने त्याग का अभाव लिखें; फिर स्वार्थ और आत्मपरीक्षण की कमी को लेखक की पीड़ा का कारण बताएँ।

10(ख). गगरी तथा बैल के उल्लेख से लेखक क्या कहना चाहता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकात्मक कथन का आशय का विवेचन पाठ के दिए गए अंश के आधार पर करना चाहिए।
- कथन के साथ उसका कारण और प्रसंग जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होता है।

चरण 1: पाठ में व्यक्त मुख्य भाव पहचानिए बरसते पानी के बावजूद फूटी गगरी न भरना और बैलों का प्यासा रह जाना बताता है कि साधन उपलब्ध होने पर भी वास्तविक आवश्यकता पूरी नहीं हो रही। गगरी का फूटापन उन कमियों की ओर संकेत करता है जो उपलब्ध लाभ को व्यर्थ कर देती हैं।

चरण 2: सामाजिक स्थिति से संबंध जोड़िए लेखक का संकेत है कि स्वार्थ, भ्रष्टाचार और उत्तरदायित्व के अभाव से जनकल्याण बाधित होता है। केवल संसाधन जुटाना पर्याप्त नहीं; उनका सही उपयोग और जरूरतमंदों तक पहुँचना भी आवश्यक है। अन्यथा अभाव ज्यों के त्यों बने रहते हैं। इस बिंब में पानी की बहुलता और प्यास का साथ-साथ होना व्यवस्था की विफलता को अधिक मार्मिक बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष गगरी और बैल का उल्लेख बताता है कि स्वार्थ और भ्रष्ट व्यवस्था के कारण संसाधन होने पर भी जनता की आवश्यकताएँ अधूरी रह जाती हैं।

त्वरित सुझाव: बरसते पानी और बनी हुई प्यास का विरोध पकड़ें; इसी से साधनों के दुरुपयोग का आशय स्पष्ट करें।

10(ग). भ्रष्टाचार की चर्चा करते समय क्या आवश्यक है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भ्रष्टाचार के संदर्भ में आत्मपरीक्षण का विवेचन पाठ के दिए गए अंश के आधार पर करना चाहिए।
- कथन के साथ उसका कारण और प्रसंग जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होता है।

चरण 1: पाठ में व्यक्त मुख्य भाव पहचानिए भ्रष्टाचार की चर्चा करते समय पहले अपने आचरण की जाँच आवश्यक है। लेखक पूछता है कि अपने स्तर और अपने दायरे में हम भी उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं। इस प्रश्न का आशय अपनी भूमिका और जिम्मेदारी पहचानना है।

चरण 2: आवश्यकता का कारण बताइए केवल दूसरों के दोषों की चटखारे लेकर चर्चा करने से सुधार नहीं होता। यदि स्वयं का व्यवहार भी स्वार्थपूर्ण और बेईमान है, तो हमारी आलोचना खोखली होगी। समाज बदलने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवहार में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा अपनानी होगी। लेखक दूसरों पर आरोप लगाने के साथ स्वयं को भी उसी कसौटी पर परखने का आग्रह करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भ्रष्टाचार की चर्चा के साथ आत्मपरीक्षण जरूरी है, क्योंकि अपने आचरण को सुधारे बिना दूसरों की निंदा सामाजिक सुधार नहीं ला सकती।

त्वरित सुझाव: अपने स्तर पर भ्रष्टाचार में भागीदारी की जाँच लिखें; फिर स्पष्ट करें कि स्वयं सुधरे बिना दूसरों की आलोचना अधूरी है।

10(घ). 'आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ?' – आपके विचार से यह स्थिति कब और कैसे बदल सकती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक परिवर्तन के उपाय का विवेचन पाठ के दिए गए अंश के आधार पर करना चाहिए।
- कथन के साथ उसका कारण और प्रसंग जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होता है।

चरण 1: पाठ में व्यक्त मुख्य भाव पहचानिए यह स्थिति तब बदलेगी जब लोग केवल माँग करने के बजाय देश के प्रति अपने कर्तव्यों को भी समझेंगे। अपना स्वार्थ ही लक्ष्य बनाने की प्रवृत्ति छोड़कर त्याग, सहयोग और सार्वजनिक हित को महत्व देना होगा। परिवर्तन का आरंभ व्यक्ति के अपने व्यवहार से होगा।

चरण 2: परिवर्तन की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए हर व्यक्ति अपने दायरे में भ्रष्टाचार से बचे, अपने कार्य में ईमानदारी बरते और गलत व्यवहार का समर्थन न करे। उपलब्ध साधनों का सही उपयोग हो तथा उनका लाभ जरूरतमंदों तक पहुँचे। आत्मपरीक्षण और सामूहिक उत्तरदायित्व मिलकर स्थायी सुधार ला सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष स्वार्थ छोड़ने, ईमानदारी अपनाने और अपने कर्तव्य निभाने से स्थिति बदलेगी; व्यक्तिगत सुधार के साथ सार्वजनिक संसाधनों का न्यायपूर्ण उपयोग भी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: कब के उत्तर में स्वार्थत्याग की दशा और कैसे के उत्तर में ईमानदारी तथा संसाधनों का उचित उपयोग बताएँ।

अथवा

10. एक बार झाँक कर उसने पुड़िया को देखा और उसे ऐसा महसूस हुआ मानो उसने अपने किसी प्यारे को कब्र की गहराई में उतार दिया हो । कुछ देर उकड़ूँ बैठी वह पुड़िया को तकती रही और उन कहानियों को याद करती रही जिन्हें वह अपने बचपन में अम्मा से सुना करती थी, जिनमें शहज़ादा अपनी रान चीरकर हीरा छिपा लेता था और देवों, खौफ़नाक भूतों तथा राक्षसों के सामने से होता हुआ सरहदों से गुज़र जाता था । इस जमाने में ऐसी कोई तरकीब नहीं हो सकती थी वरना वह अपना दिल चीरकर उसमें यह नमक छिपा लेती । उसने एक आह भरी ।

नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). लेखिका बार-बार पुड़िया को झाँक कर क्यों देखती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वस्तु के साथ भावनात्मक लगाव का विवेचन पाठ के दिए गए अंश के आधार पर करना चाहिए।
- कथन के साथ उसका कारण और प्रसंग जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होता है।

चरण 1: पाठ में व्यक्त मुख्य भाव पहचानिए नमक की पुड़िया उसके लिए साधारण वस्तु नहीं, गहरे स्नेह और आत्मीय संबंध का प्रतीक है। उसे छिपाते हुए वह ऐसा अनुभव करती है जैसे किसी प्रिय को कब्र में उतार रही हो। इसीलिए पुड़िया से उसका ध्यान बार-बार जुड़ जाता है।

चरण 2: बार-बार देखने का कारण समझाइए वह नमक को सुरक्षित रखना चाहती है और उससे अलग होने की आशंका से बेचैन है। पुड़िया को झाँककर देखना उसके लगाव, चिंता और विवशता को व्यक्त करता है। उसे ऐसी सुरक्षित तरकीब की इच्छा है जिससे वह नमक को अपने हृदय के निकट रख सके। पुड़िया को देखते रहना बताता है कि उसे छिपा देने के बाद भी उसके मन की चिंता शांत नहीं हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष पुड़िया से गहरे भावनात्मक लगाव और उसकी सुरक्षा की चिंता के कारण वह उसे बार-बार देखती है; नमक उसके लिए आत्मीयता का प्रतीक बन गया है।

त्वरित सुझाव: पुड़िया को बार-बार देखने को नमक की सुरक्षा की चिंता और आत्मीय लगाव दोनों से जोड़ें।

10(ख). अपने किसी प्यारे को कब्र की गहराइयों में उतार देने से लेखिका का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा के माध्यम से मनःस्थिति का विवेचन पाठ के दिए गए अंश के आधार पर करना चाहिए।
- कथन के साथ उसका कारण और प्रसंग जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होता है।

चरण 1: पाठ में व्यक्त मुख्य भाव पहचानिए किसी प्यारे को कब्र में उतार देने का बिंब नमक की पुड़िया को गहराई में छिपाने से उपजा है। उस क्षण वह पुड़िया को निर्जीव सामान की तरह नहीं देख पाती; उससे जुड़ी आत्मीयता के कारण उसे किसी प्रिय व्यक्ति को दूर कर देने जैसी पीड़ा होती है।

चरण 2: भावनात्मक आशय स्पष्ट कीजिए इस कथन से नमक के प्रति उसका गहरा लगाव और उसे छिपाने की विवशता प्रकट होती है। प्रिय को कब्र में रखने की अनुभूति अलगाव, दुख और असहायता का तीव्र संकेत है। यह किसी वास्तविक मृत्यु का वर्णन नहीं, उसकी अनुभूति की मार्मिक अभिव्यक्ति है। इस तुलना में वस्तु के भौतिक मूल्य से अधिक उसके भावनात्मक महत्व को सामने रखा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि नमक को छिपाना उसे किसी प्रिय से बिछुड़ने जितना दुखद लग रहा था; इससे उसका आत्मीय लगाव और विवशता व्यक्त होती है।

त्वरित सुझाव: कब्र के बिंब को वास्तविक मृत्यु न मानें; नमक से अलगाव की पीड़ा और लगाव समझाएँ।

10(ग). नमक लेखिका की परेशानी का कारण कैसे बन गया ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावना और सीमा के अवरोध का द्वंद्व का विवेचन पाठ के दिए गए अंश के आधार पर करना चाहिए।
- कथन के साथ उसका कारण और प्रसंग जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होता है।

चरण 1: पाठ में व्यक्त मुख्य भाव पहचानिए नमक से उसका आत्मीय लगाव है, इसलिए वह उसे छोड़ना नहीं चाहती। दूसरी ओर सरहद पार उसे सुरक्षित ले जाने की कठिनाई है। इसी कारण साधारण-सी नमक की पुड़िया उसके मन में चिंता और दुविधा उत्पन्न कर देती है।

चरण 2: परेशानी की अभिव्यक्ति पहचानिए वह बचपन की उस कहानी को याद करती है जिसमें शहजादा शरीर में हीरा छिपाकर सरहद पार कर जाता है। वह भी नमक को दिल में छिपा लेना चाहती है, किंतु ऐसी कोई तरकीब संभव नहीं। भावनात्मक इच्छा और व्यावहारिक असमर्थता का यही टकराव उसकी परेशानी है। अंश में कहानी की स्मृति इसी संकट से निकलने के किसी असाधारण उपाय की इच्छा को सामने लाती है।

चरण 3: निष्कर्ष नमक से आत्मीय लगाव और उसे सरहद पार सुरक्षित ले जाने की कठिनाई ने उसे परेशान किया; वह उसे छोड़ भी नहीं पाती और सुरक्षित छिपाने का उपाय भी नहीं खोज पाती।

त्वरित सुझाव: परेशानी समझाते समय नमक के प्रति स्नेह और सरहद पार ले जाने की बाधा दोनों लिखें।

10(घ). 'उसने एक आह भरी' – कथन के आधार पर लेखिका की मानसिक दशा पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आह के माध्यम से मानसिक दशा का विवेचन पाठ के दिए गए अंश के आधार पर करना चाहिए।
- कथन के साथ उसका कारण और प्रसंग जोड़ने से उत्तर स्पष्ट होता है।

चरण 1: पाठ में व्यक्त मुख्य भाव पहचानिए आह भरना उसके दुख, चिंता और विवशता को प्रकट करता है। वह नमक को इतना प्रिय मानती है कि उसे अपने दिल में छिपा लेना चाहती है। पुड़िया को देखते हुए उसे किसी प्रिय को कब्र में उतारने जैसी पीड़ा भी होती है।

चरण 2: विवशता का कारण जोड़िए बचपन की कहानियों में शरीर के भीतर अमूल्य वस्तु छिपाकर सरहद पार की जा सकती थी, पर वास्तविक जीवन में ऐसा संभव नहीं। सुरक्षित उपाय न मिलना उसे असहाय बनाता है। उसकी आह उस अधूरी इच्छा और भावनात्मक बेचैनी की सहज अभिव्यक्ति है। उसकी आह निराशा के साथ यह भी दिखाती है कि बाहरी बाधाएँ उसके आत्मीय भावों पर भारी पड़ रही हैं।

चरण 3: निष्कर्ष वह गहरे लगाव के साथ चिंता, दुख और असहायता अनुभव कर रही है; नमक को सुरक्षित रखने की तीव्र इच्छा पूरी न होने पर उसकी विवशता आह में व्यक्त होती है।

त्वरित सुझाव: आह का भाव लिखकर उसका कारण दें: दिल में नमक छिपाने की इच्छा है, किंतु वैसा उपाय संभव नहीं।

11(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
शिरीष की तुलना किससे और क्यों की गई है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवन की मस्ती और अनासक्ति को पहचानना।

- उत्तर में विचार के साथ पाठ का उपयुक्त प्रसंग देना आवश्यक है।

चरण 1: शिरीष का अवधूत से साम्य शिरीष की तुलना एक मस्त, अनासक्त अवधूत से की गई है। अवधूत सांसारिक सुख-दुख और लाभ-हानि से ऊपर उठकर अपने स्वभाव में जीता है। उसी प्रकार शिरीष भीषण गरमी, लू और सूखे वातावरण से विचलित हुए बिना कोमल फूलों से भर उठता है। दूसरे वृक्षों के मुरझाने के समय भी उसका खिलना बताता है कि वह बाहरी प्रतिकूलता के आगे अपनी जीवनीशक्ति नहीं खोता। उसका सौंदर्य संघर्ष से पलायन का नहीं, संघर्ष के बीच सहज बने रहने का सौंदर्य है। फूलों की कोमलता के साथ जीवन की यह दृढ़ता जुड़ी हुई है। इससे लेखक का संदेश है कि मनुष्य भी संकट में अपनी संवेदना और आंतरिक प्रसन्नता बनाए रखे।

चरण 2: तुलना का आशय स्पष्ट कीजिए लेखक शिरीष में कबीर जैसी फक्कड़ मस्ती और अनासक्ति देखता है। वह मानो वायुमंडल से ही जीवन-रस खींचकर प्रसन्न रहता है; अभाव उसे निराश नहीं करता। इसी संदर्भ में लेखक को महात्मा गांधी की भी याद आती है, जो चारों ओर की हिंसा और उथल-पुथल के बीच अपने आदर्श पर स्थिर रह सके। इन समानताओं का आधार बाहरी आकार नहीं, कठिन समय में धैर्य, सहजता और अपने उद्देश्य के प्रति अडिग रहना है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष मस्त अवधूत का प्रतीक है, क्योंकि वह विपरीत वातावरण में भी अनासक्त, प्रसन्न और जीवन से भरपूर रहता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अवधूत का अर्थ बताकर शिरीष के गरमी में खिलने को उस गुण का प्रमाण बनाइए।

11(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खाली मन तथा भरी जेब से लेखक का क्या आशय है ? ये बातें बाज़ार को कैसे प्रभावित करती हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार के आकर्षण और उपभोक्ता की आवश्यकताओं के संबंध को समझना।
- उत्तर में विचार के साथ पाठ का उपयुक्त प्रसंग देना आवश्यक है।

चरण 1: खाली मन और भरी जेब का अर्थ खाली मन का अर्थ ऐसा मन है जिसमें अपनी वास्तविक आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान और खरीदारी का निश्चित उद्देश्य नहीं है। यह केवल विचारों के न होने की स्थिति नहीं, बल्कि इच्छा को विवेक से दिशा न मिलना है। भरी जेब का आशय पर्याप्त धन और खरीदने की सामर्थ्य से है। जब उद्देश्यहीन मन को धन का सहारा मिल जाता है, तब बाज़ार में सजी वस्तुएँ उसे आसानी से आकर्षित करती हैं। वह उपयोगिता के बजाय चमक-दमक और दूसरों के पास उपलब्ध वस्तुओं के प्रभाव में खरीदने लगता है।

चरण 2: बाज़ार पर उनके प्रभाव को समझिए ऐसा ग्राहक बाज़ार के जादू में फँसकर अनावश्यक सामान खरीदता है। इससे आकर्षक प्रदर्शन, दिखावे और अधिकाधिक बिक्री पर आधारित बाज़ारवाद को बल मिलता है। वस्तु की आवश्यकता से अधिक उसे पाने की इच्छा महत्त्वपूर्ण बन जाती है और असंतोष भी बढ़ता है। इसके विपरीत, जिसे अपनी जरूरत का पता है, वह धन होते हुए भी केवल उपयोगी चीज लेता है। पाठ में भगत जी सीमित आवश्यकता के अनुसार खरीदारी करते हैं; बाज़ार की बाकी वस्तुएँ उन्हें नहीं लुभातीं। ऐसा संयम बाज़ार को जीवन की जरूरतें पूरी करने की उसकी उचित भूमिका देता है।

चरण 3: निष्कर्ष खाली मन और भरी जेब का मेल अनावश्यक खरीद तथा बाज़ार के आकर्षण को बढ़ाता है; आवश्यकता का स्पष्ट बोध उपभोक्ता को संयमित रखता है।

त्वरित सुझाव: दोनों पदों का अलग अर्थ लिखिए और फिर उनके मेल से पैदा होने वाली अनावश्यक खरीद का प्रभाव जोड़िए।

11(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भक्तिन के स्वभाव की ऐसी दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण उसने लेखिका को अपने अनुसार ढाल लिया । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की विशेषताओं को पाठ के घरेलू प्रसंगों से प्रमाणित करना।
- उत्तर में विचार के साथ पाठ का उपयुक्त प्रसंग देना आवश्यक है।

चरण 1: दृढ़ निश्चय और हठ का प्रभाव भक्तिन की पहली विशेषता उसका दृढ़ निश्चय और अपने ढंग को सही मानने वाला हठ है। वह दूसरों की इच्छा के अनुसार तुरंत बदलने के बजाय अपनी बात पर डटी रहती है। लेखिका को देहाती भोजन पसंद न होने पर भी भक्तिन अपना बनाया भोजन अच्छा सिद्ध करने के तर्क देती है। धीरे-धीरे लेखिका उसके सरल देहाती भोजन और दिनचर्या की अभ्यस्त हो जाती हैं। इस प्रकार भक्तिन स्वयं पूरी तरह बदलने के स्थान पर घर में अपने ढंग को जगह दिला लेती है। उसके स्वभाव की दृढ़ता घरेलू व्यवहार में साफ दिखाई देती है।

चरण 2: आत्मीय सेवा और व्यावहारिक चतुराई दूसरी विशेषता उसकी अनन्य आत्मीयता से जुड़ी सेवा-निष्ठा है। वह लेखिका को केवल नौकरी देने वाली स्वामिनी नहीं मानती, बल्कि उनके सुख-दुख से अपना जीवन जोड़ लेती है। उसकी सेवा में अपनापन और अधिकार दोनों हैं; इसलिए उसकी जिद भी लेखिका को केवल आदेश का उल्लंघन नहीं लगती। साथ ही वह अपने आचरण को उचित ठहराने के लिए व्यावहारिक तर्क खोज लेती है। लेखिका उसके प्रेम और निष्ठा का सम्मान करते हुए अनेक छोटी आदतों में समझौता कर लेती हैं। यह प्रभाव भय से नहीं, लंबे साथ और आत्मीय संबंध से बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष अपने दृढ़, हठी स्वभाव तथा आत्मीय सेवा-निष्ठा के कारण भक्तिन ने लेखिका की भोजन और घरेलू जीवन संबंधी आदतों को अपने अनुकूल बना लिया।

त्वरित सुझाव: केवल गुणों की सूची न दें; भोजन के प्रसंग और सेवा के आत्मीय संबंध से दोनों विशेषताएँ प्रमाणित करें।

11(घ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण किन-किन रूपों में पाया जाता है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भारतीय सिनेमा में चार्ली की हास्य-करुणा परंपरा के प्रभाव को पहचानना।
- उत्तर में विचार के साथ पाठ का उपयुक्त प्रसंग देना आवश्यक है।

चरण 1: भारतीय पात्र में चार्ली की छवि चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण सबसे स्पष्ट रूप में राज कपूर के फिल्मी व्यक्तित्व में दिखाई देता है। उनकी फ़िल्मों आवारा और श्री 420 में साधारण, गरीब और संघर्षशील नायक की ऐसी छवि मिलती है जो अपनी भूलों, भोलेपन और परिस्थितियों से हँसाती भी है और करुणा भी जगाती है। यह चार्ली की केवल पोशाक या चाल की नकल नहीं है। उनके छोटे आदमी की विवशता और आत्मसम्मान को भारतीय समाज की गरीबी, असमानता और महानगरीय संघर्ष की परिस्थितियों में नया रूप दिया गया है।

चरण 2: हास्य और करुणा का भारतीय मेल पाठ के अनुसार भारतीय दर्शक चार्ली में अपनी कठिनाइयों का प्रतिबिंब देखते हैं। सामान्य मनुष्य का अपने ऊपर हँस सकना और दुख के बीच भी जीवन से जुड़े रहना उनके हास्य की खास शक्ति है। भारतीय फिल्मों ने इस शक्ति को अपने सामाजिक अनुभवों से जोड़ा। राज कपूर के अतिरिक्त दिलीप कुमार और देव आनंद जैसे अभिनेताओं के हास्य अभिनय में भी चार्ली का प्रभाव देखा गया है। यहाँ प्रभाव का अर्थ हर पात्र को चार्ली की प्रतिलिपि मानना नहीं, बल्कि हँसी के भीतर पीड़ा और मानवीय गरिमा को बनाए रखने की अभिनय-दृष्टि को अपनाना है।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली का भारतीयकरण भारतीय फिल्मों के गरीब, भोले और संघर्षशील नायक तथा हास्य में घुली करुणा के रूप में

मिलता है; राज कपूर इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: राज कपूर की दो फिल्मों का उदाहरण देकर स्पष्ट करें कि भारतीयकरण में सामाजिक परिस्थिति और हास्य-करुणा दोनों बदलकर जुड़े हैं।

11(ङ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जाति प्रथा को श्रम विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता ? पाठ से उदाहरण देकर समझाइए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन और जन्म पर आधारित श्रमिक-विभाजन में अंतर करना।
- उत्तर में विचार के साथ पाठ का उपयुक्त प्रसंग देना आवश्यक है।

चरण 1: योग्यता के स्थान पर जन्म का आधार डॉ. आंबेडकर के अनुसार सभ्य समाज में कार्यों का विभाजन आवश्यक हो सकता है, पर जाति-प्रथा को उसका उचित आधार नहीं माना जा सकता। श्रम-विभाजन का आधार व्यक्ति की रुचि, योग्यता और प्रशिक्षण होना चाहिए। जाति-प्रथा इन बातों को देखे बिना जन्म से ही व्यक्ति का काम निश्चित कर देती है। वह केवल कार्यों को अलग नहीं करती, बल्कि काम करने वालों को ऊँच-नीच के स्थायी वर्गों में बाँटती है। इसलिए वह कार्य-सुविधा की स्वाभाविक व्यवस्था के बजाय श्रमिकों का असमान सामाजिक विभाजन बन जाती है।

चरण 2: व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता का अभाव पाठ में समझाया गया है कि उद्योग और तकनीक बदलते रहते हैं; इसलिए जीविका के लिए पेशा बदलने की स्वतंत्रता जरूरी है। जाति से निर्धारित व्यवसाय में बँधा व्यक्ति काम का अवसर समाप्त हो जाने पर भी दूसरा काम अपनाने में बाधा अनुभव करता है। इस प्रकार जाति-प्रथा बेरोजगारी और आर्थिक असुरक्षा को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त जिन कामों को हीन मान लिया गया है, उनसे जुड़े लोगों में काम के प्रति अरुचि पैदा हो सकती है। बिना रुचि और स्वतंत्र चुनाव के कराया गया काम न व्यक्ति की क्षमता विकसित करता है, न समाज की कार्यकुशलता।

चरण 3: निष्कर्ष जाति-प्रथा श्रम-विभाजन का उचित आधार नहीं है, क्योंकि वह योग्यता और स्वतंत्र चुनाव के स्थान पर जन्म, ऊँच-नीच तथा पेशा बदलने पर प्रतिबंध को प्रधान बनाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जन्म बनाम योग्यता का अंतर लिखकर बदलते उद्योगों में पेशा बदलने की जरूरत का उदाहरण जोड़ें।

12(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

'जूझ' के लेखक में स्वयं कविता रच सकने का आत्मविश्वास कैसे पैदा हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साहित्यिक रुचि के विकास में संवेदनशील शिक्षक और निरंतर अभ्यास का योगदान होता है।
- लेखक के आत्मविश्वास का आधार सौंदलगेकर मास्टर का कविता-पाठ, प्रोत्साहन और स्वयं रचना करने का अभ्यास है।

चरण 1: शिक्षक से मिली प्रेरणा सौंदलगेकर मास्टर कविता को लय, भाव और अभिनय के साथ पढ़ाते थे। वे कवियों के जीवन और अपनी कविताओं की चर्चा भी करते थे। उनके प्रभावशाली पाठ से लेखक कविता के भावों को अनुभव करने लगा। उसे लगा कि कवि भी उसी जैसे मनुष्य होते हैं; आसपास के अनुभवों को शब्द देकर कविता बनाई जा सकती है।

चरण 2: अभ्यास से बढ़ा विश्वास लेखक खेत में काम करते और पशु चराते हुए पढ़ी हुई कविताएँ गुनगुनाता तथा उनकी लय पर अपनी पंक्तियाँ बनाने लगा। प्रकृति और अपने जीवन के अनुभव उसे रचना की सामग्री देने लगे। वह अपनी कविताएँ मास्टर को सुनाता; उनके मार्गदर्शन और प्रशंसा से उसका संकोच दूर हुआ और स्वयं कविता रच सकने का आत्मविश्वास पैदा हुआ।

चरण 3: निष्कर्ष सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा, कविता का भावपूर्ण पाठ और अपनी रचनाओं पर मिला प्रोत्साहन लेखक के काव्य-सृजन के आत्मविश्वास का आधार बने।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रेरक शिक्षक के साथ लेखक के स्वतंत्र अभ्यास और प्रोत्साहन की कड़ी अवश्य जोड़ें।

12(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

महाकुण्ड में अशुद्ध जल को रोकने की क्या व्यवस्था थी ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मोहनजोदड़ो का महाकुण्ड विकसित निर्माण-कौशल और जल-प्रबंधन का उदाहरण है।
- जल की स्वच्छता बनाए रखने के लिए कुण्ड की जलरोधक बनावट और गंदे पानी की निकासी दोनों आवश्यक थे।

चरण 1: अशुद्ध जल का प्रवेश रोकने की बनावट महाकुण्ड में पक्की ईंटों की अत्यंत सावधानी से चिनाई की गई थी। ईंटों के जोड़ चूने और चिरोड़ी के गारे से बंद किए गए थे। दीवारों के पीछे कोलतार का लेप करके उन्हें जलरोधक बनाया गया था। इससे बाहर का अशुद्ध पानी दीवारों की दरारों या जोड़ों से भीतर रिसकर कुण्ड के स्वच्छ पानी में नहीं मिल सकता था।

चरण 2: स्वच्छता की सहायक व्यवस्था कुण्ड के तल और दीवारों की मजबूत बनावट के साथ पानी निकालने की व्यवस्था भी थी। गंदे पानी को निकासी-नाली से बाहर निकाला जा सकता था। इस प्रकार जलरोधक निर्माण अशुद्ध पानी के प्रवेश को रोकता था और निकासी की सुविधा कुण्ड की सफाई में सहायक थी। यह व्यवस्था हड़प्पा सभ्यता के लोगों की स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाती है।

चरण 3: निष्कर्ष पक्की ईंटों की सघन चिनाई, चूने-चिरोड़ी के गारे और दीवारों के पीछे कोलतार की जलरोधक परत से महाकुण्ड में बाहरी अशुद्ध जल का रिसाव रोका गया था।

त्वरित सुझाव: अशुद्ध पानी को भीतर आने से रोकने की व्यवस्था बताते समय जलरोधक चिनाई और कोलतार का उल्लेख करें।

12(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए :

कार्यालय में अपने सहकर्मियों के साथ सेक्शन ऑफ़ीसर वाई.डी. पंत के व्यवहार पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर पंत का कार्यालयीन व्यवहार उनके अनुशासनप्रिय किंतु आत्मीय व्यक्तित्व को सामने लाता है।
- सहकर्मियों से उनके संबंधों में वरिष्ठता का सम्मान, हल्का हास्य और पीढ़ियों का अंतर दिखाई देता है।

चरण 1: आत्मीय और विनोदी व्यवहार सेक्शन ऑफ़ीसर वाई.डी. पंत कार्यालय के सहकर्मियों से केवल अधिकारी की तरह औपचारिक संबंध नहीं रखते थे। वे बातचीत और हँसी-मजाक में शामिल होते थे तथा उन्हें अपनापन देते थे। किशनदा से प्राप्त आत्मीय कार्यालयीन संस्कृति उनके व्यवहार में बनी हुई थी। वे अपने अनुभवी और वरिष्ठ होने का बोध रखते थे, पर कार्यालय का वातावरण सहज भी बनाए रखते थे।

चरण 2: अनुशासन और पुरानी मान्यताओं का आग्रह उनकी आत्मीयता के साथ समय की पाबंदी, कामकाज की मर्यादा और पुराने जीवन-मूल्यों का आग्रह भी जुड़ा था। नए साथियों की आधुनिक आदतें उन्हें कभी असहज करती थीं। इसलिए उनके व्यवहार में कभी हल्का उपदेश और बुजुर्गाना टिप्पणी भी आ जाती थी। फिर भी वे सहकर्मियों के प्रति दुर्भावना रखने वाले कठोर अधिकारी नहीं थे; उनका स्वभाव स्नेहपूर्ण और कुछ परंपरानिष्ठ था।

चरण 3: निष्कर्ष पंत का व्यवहार आत्मीय, विनोदी और सहयोगपूर्ण था; उसमें अनुशासनप्रियता तथा पुरानी पीढ़ी के मूल्यों का आग्रह भी दिखाई देता था।

त्वरित सुझाव: केवल कठोर या केवल मजाकिया कहने के बजाय पंत के स्नेह और अनुशासन, दोनों पक्षों को जोड़ें।

13(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

वाई.डी. पन्त की पत्नी पति की अपेक्षा सन्तान की ओर क्यों पक्षपाती दिखलाई पड़ती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परिवार में बदलती आकांक्षाएँ पति-पत्नी और संतान के दृष्टिकोण को अलग-अलग प्रभावित करती हैं।
- यशोधर बाबू की पत्नी का संतान के प्रति झुकाव सामाजिक बदलाव और जीवन-सुविधाओं के प्रति उनके खुलेपन से जुड़ा है।

चरण 1: पति की परंपरानिष्ठ दृष्टि वाई.डी. पंत पुराने संस्कारों, सादगी और किशनदा से मिले जीवन-मूल्यों से गहरे जुड़े हैं। वे बच्चों की आधुनिक जीवन-शैली, अधिक खर्च और उत्सव मनाने के नए ढंग को सहज स्वीकार नहीं कर पाते। परिवार की बढ़ती समृद्धि भी उनके भीतर सहज प्रसन्नता के बजाय कई प्रश्न जगाती है। इस कारण बच्चों और उनके बीच वैचारिक दूरी बन जाती है।

चरण 2: पत्नी की बदलते जीवन से सहमति उनकी पत्नी ने परिवार और बच्चों के पालन-पोषण में जीवन बिताया है। अब बच्चों की उन्नति, कमाई और उनसे प्राप्त सुख-सुविधाएँ उन्हें अच्छी लगती हैं। वे समय के अनुरूप रहन-सहन अपनाने और बच्चों की खुशी में भाग लेने को अनुचित नहीं मानतीं। पति की तरह हर नई बात को पुराने मापदंड से परखने के बजाय वे संतान की आकांक्षाओं को समझती और स्वीकार करती हैं।

चरण 3: पक्षपात दिखने का कारण बच्चों की इच्छाओं और पिता की आपत्तियों में टकराव होने पर माँ स्वाभाविक रूप से बच्चों का समर्थन करती दिखाई देती हैं। इसमें बच्चों के प्रति ममता के साथ अपनी दबाई हुई इच्छाओं और सुविधा की चाह भी है। उनका यह झुकाव पति के प्रति प्रेमहीनता का प्रमाण नहीं, बल्कि परिवार में बदलती परिस्थितियों के प्रति अधिक अनुकूल दृष्टि का परिणाम है।

चरण 4: निष्कर्ष पंत की पत्नी बच्चों की उन्नति, आधुनिक जीवन-शैली और सुविधाओं को स्वीकार करती हैं, जबकि पंत पुरानी मान्यताओं से बँधे हैं; इसी दृष्टिभेद से वे संतान की ओर पक्षपाती दिखाई देती हैं।

त्वरित सुझाव: माँ के झुकाव को केवल ममता तक सीमित न करें; बदलते जीवन और पिता की परंपरानिष्ठता का अंतर भी समझाएँ।

13(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

दत्ताराव ने लेखक की पढ़ाई की समस्या का समाधान किस प्रकार किया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जूझ में शिक्षा पाने का संघर्ष परिवार की आर्थिक स्थिति और पिता के विरोध से जुड़ा है।
- दत्ताराव का सामाजिक प्रभाव लेखक की पढ़ाई फिर शुरू कराने में निर्णायक सिद्ध होता है।

चरण 1: समस्या और सहायता की योजना लेखक पढ़ना चाहता था, किंतु पिता उसे खेत में काम कराना चाहते थे और स्कूल भेजने के लिए तैयार नहीं थे। लेखक और उसकी माँ समझते थे कि सीधे आग्रह से पिता नहीं मानेंगे। इसलिए उन्होंने प्रभावशाली दत्ताराव की सहायता ली। माँ ने उन्हें लेखक की पढ़ाई की इच्छा और पिता के विरोध के बारे में बताया, जिससे वे स्थिति को समझकर हस्तक्षेप कर सकें।

चरण 2: पिता को समझाना और दबाव डालना दत्ताराव ने लेखक के पिता को बुलाकर लड़के की पढ़ाई बंद कराने पर नाराजगी प्रकट की। उन्होंने शिक्षा का महत्त्व समझाया और स्पष्ट किया कि बच्चे को पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। पिता दत्ताराव की बात टालने की स्थिति में नहीं थे। उनके समझाने और दृढ़ हस्तक्षेप से पिता का विरोध कमजोर पड़ा और स्कूल जाने की अनुमति का रास्ता खुला।

चरण 3: काम और पढ़ाई के बीच समझौता अनुमति के साथ खेती का काम करने की शर्त भी जुड़ी रही। लेखक को विद्यालय के समय के अतिरिक्त खेत के काम में हाथ बँटाना था; छुट्टियों में भी काम से बचना नहीं था। लेखक ने पढ़ाई की तीव्र इच्छा के कारण यह कठिन व्यवस्था स्वीकार की। इस प्रकार दत्ताराव ने पिता को राजी करके स्कूल लौटने की बाधा दूर की, यद्यपि लेखक का श्रम और संघर्ष समाप्त

नहीं हुआ।

चरण 4: निष्कर्ष दत्ताराव ने पिता को शिक्षा का महत्त्व समझाकर और दृढ़ता से हस्तक्षेप करके लेखक को स्कूल भेजने के लिए राजी किया; लेखक ने खेती का काम करते रहने की शर्त स्वीकार की।

त्वरित सुझाव: उत्तर की क्रमबद्ध कड़ी रखें: माँ की सहायता-योजना, दत्ताराव का हस्तक्षेप और काम के साथ पढ़ाई की अनुमति।

13(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

ऐन फ्रेंक की डायरी के आधार पर नाज़ियों के अत्याचारों पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक की डायरी यहूदी समुदाय पर नाज़ी शासन के अमानवीय अत्याचारों का प्रत्यक्ष मानवीय दस्तावेज है।
- व्यक्तिगत भय और छिपकर जीने की विवशता से व्यापक नस्लवादी हिंसा तथा स्वतंत्रता के हनन का पता चलता है।

चरण 1: अधिकारों और स्वतंत्रता का हनन नाज़ियों ने यहूदियों को सामान्य मनुष्य की तरह जीने का अधिकार नहीं दिया। उनकी पहचान अलग की गई और सार्वजनिक जीवन, आने-जाने तथा सामान्य गतिविधियों पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए। यहूदी होने मात्र से उन्हें अपमान, भेदभाव और गिरफ्तारी का भय सहना पड़ता था। डायरी से स्पष्ट होता है कि नस्ल के आधार पर किया गया यह उत्पीड़न उनके दैनिक जीवन को लगातार संकुचित कर रहा था।

चरण 2: गिरफ्तारियाँ और परिवारों की दुर्दशा यहूदियों को घरों से पकड़कर ले जाया जाता था तथा यातना-शिविरों में भेजा जाता था। परिवार बिखर जाते और लोगों को अपने प्रियजनों के जीवित होने तक की जानकारी नहीं मिलती थी। भूख, असुरक्षा और मृत्यु की आशंका ने पूरे समुदाय को आतंकित कर दिया था। ऐन की चिंता केवल अपने लिए नहीं थी; वह बाहर यातना झेल रहे लोगों की दुर्दशा को भी तीव्र संवेदना से अनुभव करती है।

चरण 3: छिपे जीवन पर अत्याचारों का प्रभाव इसी आतंक के कारण ऐन और उसके परिवार को गुप्त स्थान में छिपकर रहना पड़ा। आवाज करने, बाहर निकलने और सहज ढंग से जीने तक पर भय का पहरा था। एक किशोरी का स्वाभाविक बचपन स्वतंत्रता और सुरक्षा से वंचित हो गया। उसकी डायरी बताती है कि नाज़ी अत्याचार केवल शारीरिक हिंसा नहीं, मनुष्य की गरिमा, आशा और मानसिक शांति पर भी निर्मम आघात थे।

चरण 4: निष्कर्ष डायरी नाज़ियों के यहूदी-विरोधी भेदभाव, गिरफ्तारियों, यातना-शिविरों और आतंक की निंदा करती है; ऐन का छिपा जीवन इन अत्याचारों के अमानवीय प्रभाव का मार्मिक प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: प्रतिबंध, गिरफ्तारी और छिपकर जीने की विवशता को जोड़कर लिखें; बिना प्रमाण कोई आँकड़ा या उद्धरण न जोड़ें।

14. सौंदलगेकर के व्यक्तित्व के आधार पर किसी अध्यापक के लिए आवश्यक जीवन-मूल्यों पर प्रकाश डालिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में सौंदलगेकर अपने विषय के प्रति प्रेम और विद्यार्थियों के प्रति आत्मीयता से उनकी छिपी प्रतिभा जगाते हैं।
- शिक्षक का उद्देश्य ज्ञान के साथ संवेदनशीलता, सृजनशीलता और आत्मविश्वास विकसित करना है।

चरण 1: विषय के प्रति निष्ठा और कलात्मक अभिरुचि सौंदलगेकर मराठी पढ़ाते हुए कविता को केवल अर्थ समझाकर समाप्त नहीं करते। वे उसे लय, सुर और भाव के साथ सुनाते हैं तथा कवियों के प्रसंग बताते हैं। उनके काव्यपाठ में तन्मयता होती है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्यापक को अपने विषय का गहरा ज्ञान और उसके प्रति सच्चा अनुराग होना चाहिए। उसकी तैयारी और अभिव्यक्ति पाठ को विद्यार्थियों के लिए जीवंत बनाती है। सौंदलगेकर के प्रभाव से आनंदा भी कविता की लय और सौंदर्य को अनुभव करने लगता है।

चरण 2: आत्मीयता, प्रोत्साहन और प्रतिभा का सम्मान सौंदलगेकर आनंदा की कविताएँ सुनते हैं, उसकी रुचि को महत्त्व देते हैं और रचना को सुधारने में सहायता करते हैं। उनका व्यवहार विद्यार्थी को यह विश्वास देता है कि वह भी कविता लिख सकता है। इस प्रसंग से अध्यापक के लिए सहृदयता, धैर्य और निष्पक्ष प्रोत्साहन का मूल्य सामने आता है। शिक्षक को विद्यार्थी की आर्थिक स्थिति या बाहरी झिझक से उसका मूल्यांकन करने के बजाय उसकी क्षमता पहचाननी चाहिए। अपनापन विद्यार्थी को अपनी बात कहने और सीखने का साहस देता है।

चरण 3: स्वतंत्र सृजन और जीवन में उत्साह का संचार सौंदलगेकर की संगति में आनंदा आसपास के दृश्यों और अनुभवों को कविता में ढालने लगता है। खेतों में काम करते समय भी वह रचना के आनंद से जुड़ा रहता है। इस प्रकार अच्छा अध्यापक अनुकरण तक सीमित नहीं रखता, बल्कि स्वतंत्र कल्पना और मौलिक अभिव्यक्ति को दिशा देता है। सौंदलगेकर का उदाहरण बताता है कि ज्ञान, संवेदना और सहयोग मिलकर विद्यार्थी की कठिन परिस्थितियों में भी उत्साह तथा आत्मविश्वास बनाए रख सकते हैं। यही अध्यापन का व्यापक मानवीय उद्देश्य है।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर के व्यक्तित्व से विषय-निष्ठा, सौंदर्यबोध, सहृदयता, धैर्य और प्रतिभा को प्रोत्साहित करने जैसे मूल्य उभरते हैं। इनसे युक्त अध्यापक विद्यार्थी के व्यक्तित्व और भविष्य को सकारात्मक दिशा दे सकता है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक जीवन-मूल्य के साथ सौंदलगेकर के काव्यपाठ या आनंदा को दिए प्रोत्साहन का प्रसंग जोड़ें।

अथवा

14. 'सिलवर वेडिंग' कहानी के पात्र किशन दा के उन जीवन-मूल्यों की चर्चा कीजिए जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'सिलवर वेडिंग' में किशन दा पुरानी पीढ़ी के सामुदायिक, सादगीपूर्ण और सेवाभावी जीवन के प्रतिनिधि हैं।
- यशोधर बाबू का किशन दा से मिला संस्कार उनके निजी निर्णयों और नई पीढ़ी के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करता रहता है।

चरण 1: आत्मीयता और निःस्वार्थ सहयोग किशन दा ने यशोधर बाबू को दिल्ली में शुरुआती दिनों में सहारा दिया था। उनके यहाँ अपनापन और दूसरों के काम आने की भावना थी। वे पहाड़ से आए लोगों की सहायता करते तथा उन्हें साथ लेकर चलते थे। इसी अनुभव से यशोधर बाबू के मन में यह मूल्य बैठ गया कि मनुष्य को केवल अपने परिवार की सुविधा तक सीमित नहीं रहना चाहिए। परिचितों और संबंधियों से मिलना, उनके सुख-दुख में भाग लेना और सामाजिक संबंध निभाना भी जीवन का आवश्यक दायित्व है।

चरण 2: सादगी, संयम और प्रदर्शन से दूरी किशन दा का जीवन सादा था। वे भोग-विलास और दिखावे को जीवन की उपलब्धि नहीं मानते थे। उनके आदर्श से प्रभावित यशोधर बाबू भी खर्चीली आधुनिक जीवन-शैली और बाहरी चमक-दमक को सहज स्वीकार नहीं कर पाते। विवाह की वर्षगाँठ को आधुनिक ढंग से मनाने का आयोजन उन्हें असहज करता है। यह प्रसंग दिखाता है कि किशन दा से मिले सादगी और संयम के संस्कार उनके मन में गहरे बने हुए हैं। उनकी कसौटी वस्तुओं की नवीनता से अधिक जीवन की सार्थकता है।

चरण 3: सामुदायिक जुड़ाव और उत्तरदायित्व किशन दा के जीवन में लोगों से मेल-जोल और आत्मीय संबंधों का महत्त्व था। यशोधर बाबू भी सामाजिक संपर्कों, परंपराओं और सामूहिक गतिविधियों को उपयोगी मानते हैं। नई पीढ़ी की निजी सुख-सुविधा पर केंद्रित दृष्टि से उनका मतभेद इसी संस्कार के कारण होता है। किशन दा के अंतिम दिनों का अकेलापन उन्हें यह भी सोचने को बाध्य करता है कि समाज की सेवा करने वाले व्यक्ति को बुढ़ापे में अपनापन क्यों नहीं मिलता। इसलिए किशन दा की स्मृति उनके लिए केवल अतीत का मोह नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों और दायित्वों की कसौटी है।

चरण 4: निष्कर्ष किशन दा की आत्मीयता, परोपकार, सादगी, संयम और सामुदायिक उत्तरदायित्व यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे। बदलते पारिवारिक परिवेश में भी वे इन्हीं मूल्यों से जीवन और संबंधों को परखते हैं।

त्वरित सुझाव: किशन दा के मूल्यों को गिनाने के साथ यह भी स्पष्ट करें कि वे यशोधर बाबू के व्यवहार में कैसे दिखाई देते हैं।